

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा



संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक
डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष २१ - अंक ८२, अप्रैल - जून २०२४

शहर के लोग

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

आग लगी है
क्षितिज-वनों में
लपटें उठ रही हैं
जैसे चौकड़ी भरते द्राघा के
द्रुतगामी नीले हरिन
जैसे सुनहरे रंगों की बकरियों के शिशु
छलांगें भर रहे हैं
अपने आश्रय-स्थल की ओर जाते हुए.

शहर के नीचे
उग रहा है
एक कंकरीट का गुलाब
गतिविहीन डंठल लिए
किसी अधःकोष की
कर रहा है प्रतीक्षा
चांद्रायण पराग के लिए
और आग की लपटों में साँस लेने को
कंकरीटी गुलाब की पंखुरियों में खोए
अदृश्यप्राय
दौड़ते लोग
सुखों से ऊबते लोग
दुःखों में ढूबते लोग
शहर के लोग.

वसुधा

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित

पोस्ट-डॉक्टरल फ्लोशिप अवार्डी

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
रघुनायक के प्रति	डॉ. ऋतु माथुर	७
अध्याय १८ – मोक्ष, संन्यास योग	अविनाश कुमार	८
अखिल विश्व के स्वामी राम	सुशील शर्मा	११
आखिर क्यों नरेंद्र मोदी को देश तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहता है	प्रभात झा	१३
अनुवाद से सम्वाद तक	डॉ. सन्तोष खन्ना	१८
मैं अंडमान हूँ	प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल	२४
राजनीति और साहित्य	प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित	२९
सत्य सर्वहारा	सुखमिला अग्रवाल "भूमिजा"	३२
अप्रतिम भारतीय सांस्कृतिक धरोहर योग	विजय रंजन	३३
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	प्रो. किरण हजारिका	४३
दरख्तों की परछाई	प्रीति सिन्हा	४४
शहर के लोग	पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि	१ अ
डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार		४४ अ

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00

डाक द्वारा By Mail \$35.00, International Mail \$40.00

Website: vasudhamagazine.ca

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

जहाँ वर्ष २०२३ के अंतिम माह आप सबकी शुभकामनाओं से मुझे भारत में अनेक सुपरिचितों के सम्पर्क में लाते रहे और अनेक कॉन्फरेंस के माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान होता रहा; वहाँ २०२४ में भी यह सिलसिला जारी रहा और जनवरी-मार्च के अंक में मैंने संक्षेप में इसका विवरण भी दिया है। इस बार का मेरा भारत भ्रमण कुछ लम्बा चल रहा है। और साहित्यिक गतिविधियाँ भी उसी हिसाब से अपनी हुत गति से चल रही हैं जो मैं संक्षेप में आप सबसे साझा करना स्वयं का एवं वसुधा का सौभाग्य समझती हूँ क्योंकि इस दौरान जहाँ पुराने साहित्यकारों से मेल-मिलाप हुआ वहाँ नए साहित्यकारों से परिचय आनंदित करता रहा।

उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री तथा केन्द्र सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी, जिनकी पुस्तक "वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली" का लोकार्पण करने का सौभाग्य मुझे पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि जी के आमंत्रण, सौजन्य से दिल्ली में प्राप्त हुआ था और जिसका वर्णन मैंने पिछले अंक में किया है, ने हरिद्वार में विश्व हिन्दी दिवस पर एक बहुत ही भव्य आयोजन किया। सभागार पूर्णरूपेण भरा हुआ था। उसमें अतिथि वक्ता के रूप में सम्मिलित हो गौरवान्वित हुई। गंगा दर्शन, गंगा आरती, मंदिर-दर्शन और गंगा जी के ही तट पर ही स्वागत-समारोह, स्मृति-चिह्न में गंगा-जल-घट सब कुछ अभूतपूर्व था। उनका हिमालया विश्व विद्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय देख अभिभूत हुई। लेखक-ग्राम जो अभी सम्पूर्ण नहीं बना है, अपनी अपूर्णता में भी आपको सम्मोहित करता है। कंडियाल जी का योगदान भी सराहनीय था। निशंक जी द्वारा पल-पल दिये गए स्नेहपूर्ण स्वागत की आभारी हूँ। एक और बात के लिए निशंक जी का आभार व्यक्त करना चाहूँगी – निशंक जी ने अपनी सुपुत्री के विवाह-पर्व पर मुझे आमंत्रित किया था पर दुर्भाग्यवश उस समय तबियत खराब होने के कारण उसमें शरीक न हो सकी और उस आनंद से वंचित रह गई।

डी.पी. विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) में हिन्दी एवं आई.क्यू.ए.सी. विभाग के संयुक्त तत्वावधान में "वर्तमान समाज में राम-कथा की प्रासंगिकता" विषय पर स्वामी विवेकानंद की स्मृति में एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें अध्यक्ष डॉ. स्वामी भगवताचार्य जी, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास, सनातन धर्म परिषद् गोंडा (उ.प्र.), प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल, बीज वक्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास, सनातन धर्म परिषद् जबलपुर (म.प्र.), और मुझे विशिष्ट अतिथि एवं एक सत्र-अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया; वहाँ श्री राजकुमार अग्रवाल, वरिष्ठ सदस्य प्रशासन समिति, मानस-मर्मज्ञ पं. सुरेशचंद्र तिवारी, आचार्य श्री मनोहर गुरुजी महायोगधारा बिजनौर की प्रशंसनीय उपस्थिति में, जहाँ कु. शिक्षा, डिप्टी कलेक्टर भी थीं, माननीया प्राचार्या डॉ. श्रीमती अंजू शुक्ला, जो थीं तो मंचासीन पर उनकी दृष्टि का आभास ऐसा था मानो वे यत्र-तत्र-सर्वत्र विराजमान हों, के मार्गदर्शन में, संचालक डॉ. श्रीमती सुरुचि मिश्रा, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग एवं संचालक डॉ. अंकुर शुक्ला के कुशल संचालन में, प्रबुद्ध श्रोता-गणों के मध्य, भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। प्राचार्या आदरणीय डॉ. अंजू शुक्ल जी, एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रिय डॉ. सुरुचि मिश्रा का विशिष्ट अतिथि एवं तकनीकी सत्र के अध्यक्ष-पद हेतु अभार ज्ञापित करती हूँ।

डॉ. सुरुचि मिश्रा ने संगोष्ठी के कार्यक्रम की व्याख्या करते हुए बताया कि - डॉ. स्वामी भगवदाचार्य जी ने सत्संग की महिमा का बखान करते हुए इन्हें मानस जीवन के सबसे अनमोल क्षणों में से एक बतलाया। और बताया कि राम-नाम का जाप सभी पापों को नष्ट कर मुक्ति प्रदान करने वाला है। प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल जी ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य में रामत्व की खोज ही मानव जीवन का ध्येय है। किसी भी कार्य को पूर्ण समर्पण एवं सम्पूर्णता के साथ करना ही राममय होना है। डॉ. स्नेह ठाकुर ने श्रीराम की नारी के प्रति सम्वेदना को बताते हुए कहा कि, नारी पुरुष और पुरुषार्थ ही जननी है जिसकी सम्वेदना कभी नहीं मरती बल्कि अंतर्मन के किसी कोने में जा छिपती है जो श्रीराम जैसे आदर्श पुरुष को पाकर पुनः प्रस्फुटित हो उठती है। श्री राजकुमार अग्रवाल जी ने कहा कि दाम्पत्य जीवन का सार रामचारितमानस में छिपा है जो इनके पालन से ही जीवन में आत्मसात हो



सकता है। आचार्य श्री मनोहर गुरु जी ने राम नाम का अनुभव योग के माध्यम से कराकर संगोष्ठी में एक नई ऊर्जा प्रवाहित की। पं. सुरेशचंद्र तिवारी ने कहा कि जब तक इस धरती पर कल-कल करने वाली सरिता प्रवाहित होती रहेगी तब तक राम कथा इस धरती में मंदाकिनी की भाँति प्रवाहमान रहेगी। रामचारित मानस में भवसागर से पार लगाने के लिए राम-नाम को जलयान के समान बतलाया। डॉ. श्रीमती अंजू शुक्ल ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास जी की रचना रामचारितमानस का प्रारम्भ संतों की वंदना, बंदु प्रथम महीसुर चरना, मोहजनित संशय सब हरना। सुजन समाज सकल गुन खानी, करऊ प्रनाम सप्रेम सुबानी, से हुई है जो इस बात को इंगित करता है कि परमात्मा की असीम अनुकम्पा से ही संत मिलन का सौभाग्य प्राप्त होता है। डॉ. सुरुचि मिश्रा ने कहा कि तुलसी ने समग्र भारतीय परम्परा में संदर्शिता स्थापित करते हुए भारतीय संस्कृति के शुक्ल पक्ष को अपने साहित्य में चित्रित कर समाज में नवीन चेतना का संचार किया है। इसलिए आज भी राम काथा की प्रासंगिकता बनी हुई है। डॉ. अंकुर शुक्ल ने राम के व्यवहारिक पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डाला। संगोष्ठी में लगभग १३५ पंजीयन और लगभग ४० शोधपत्र का वाचन किया गया। प्राचार्या डॉ. श्रीमती शुक्ला जी एवं डॉ. सुरुचि मिश्रा जी को सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई।

जगदम्बी प्रसाद यादव स्मृति प्रतिष्ठान, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, विदेश मंत्रालय एवं अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी परिषद् भारत के संयुक्त तत्वावधान में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं काव्यगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य एवं विश्व हिन्दी दिवस के प्रस्तावक श्री वीरेंद्र कुमार यादव ने किया। उद्घाटन पूर्व सांसद एवं एस.आई.एस. सिक्यूरिटी कम्पनी के संस्थापक श्री रवीन्द्र किशोर सिन्हा, पूर्व सांसद एवं संस्थापक श्री अश्वनी कुमार चौबे, उपभोक्ता मामले खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्यमंत्री, भारत सरकार, विशिष्ट अतिथि भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के महानिदेशक, श्री कुमार तुहिन, एवं प्रख्यात भाषाविद् व पत्रकार श्री राहुल देव की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। कैनेडा की प्रख्यात साहित्यकार और वसुधा पत्रिका की संस्थापक, सम्पादक, प्रकाशक के रूप में वीरेंद्र जी ने मेरी गरिमामयी उपस्थिति हेतु धन्यवाद दिया। इस महत्ती कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित होने, प्रवासी भारतीय साहित्यकार के रूप में विचार रखने का समय प्रदान करने हेतु, वीरेंद्र जी की आभारी हूँ। और सबसे बड़ी बात थी कि जहाँ पुराने संगी साथियों का मिलन वहाँ सम्भव हुआ, वहाँ कुछ नए साहित्य-प्रेमियों से भी परिचय हुआ। मुझे खेद है कि मैं सम्पूर्ण समय वहाँ उपस्थित न हो सकी क्योंकि मुझे कुछ घंटों बाद ही चेन्नई में होने वाली कान्फ्रेंस के लिए हवाई-यात्रा करनी थी। उद्घाटन सत्र के बाद कई सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा सत्र की अध्यक्षता श्री राहुल देव, व्यंग्य और राजभाषा की अध्यक्षता डॉ. प्रेम जनमेजय, प्रख्यात व्यंग्यकार, देश में हिन्दी विदेश में हिन्दी सत्र की अध्यक्षता डॉ. नारायण कुमार, मानद निदेशक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद्, कंप्यूटर और हिन्दी सत्र की अध्यक्षता डॉ. बालेंदु दधीचि और काव्य-गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने की। डॉ. अशोक जजोरिया, डॉ. राजेश एवं अन्य गणमान्य साहित्य-प्रेमियों की गरिमामयी उपस्थिति में यह महत्वपूर्ण सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

चेन्नई में एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार हुआ जिसमें मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। प्राचार्य डॉ. संतोष बाबू, विभागाध्यक्ष डॉ अशोक कुमार द्विवेदी जी, डॉ. प्रवीण जी, महाविद्यालय के सभी आयोजकों एवं कार्यकर्ताओं का धन्यवाद देते हुए, छात्रवर्ग - स्वरूप एवं अन्य सभी के द्वारा स्नेह को दिया गया प्रेम-परिपूर्ण स्नेह की आभारी हूँ। जहाँ “हरे रामा हरे कृष्णा” के माननीय अजीता जी की शालीनता ने हृदय को सदा-सर्वदा के लिए उनके प्रति नतमस्तक किया वहाँ सभी मंचासीन विभूतियों के व्यक्तित्व ने और श्रोताओं के आदर-सम्मान ने अभिभूत किया। अशोक जी के ही शब्दों में वहाँ का निम्नांकित विवरण प्रस्तुत कर रही हूँ - “चेन्नई के लब्ध प्रतिष्ठ महाविद्यालय द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव कालेज के हिन्दी विभाग शिफ्ट-२ द्वारा एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का सफल आयोजन किया गया जिसमें देश विदेश से आए लगभग ४५ विद्वानों ने और २० छात्रों ने अपना शोध प्रपत्र प्रस्तुत किया। जिसे आगामी जुलाई-अगस्त तक पुस्तकाकार

रूप में आईएसबीएन के साथ प्रकाशित किया जाएगा और उसका लोकार्पण विद्वत मनीषी के कर कमलों द्वारा होगा। इस सेमिनार का विषय था – ‘वर्तमान समाज के लिए श्रीमद्भगवद् गीता की प्रासंगिकता’।

इस सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में इस्कान के श्री अजीता गोपीदासजी, ने कहा कि, “श्रीमद् गीता को पढ़ने के बाद किसी और शास्त्र को पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती।”

विशिष्ट अतिथि के रूप में कनाडा से पधारी विश्व विष्यात साहित्यकारा डॉ स्नेह ठाकुर ने कहा कि, “इस सेमिनार का विषय आज के समाज की प्रसंगिकता ही नहीं बल्कि आवश्यकता है। इस हेतु मैं, विभागाध्यक्ष डॉ अशोक कुमार द्विवेदी की प्रशंसा करती हूँ।”

मालदीव से आए श्री श्रीनारायन मिश्रा ने कहा कि, “गीता हम सबको जीवन जीने की सीख देती है।” पांडिचेरी से पधारी डॉ पद्मा प्रिया ने “गीता के महत्व” पर प्रकाश डाला। कॉलेज के महासचिव डॉ. अशोक कुमार मूँधड़ा ने गीता को “समाज की मार्गदर्शिका” बताया। कोषाध्यक्ष श्री अशोक केड़ीया ने “छात्रों को इससे सीख लेने का संदेश” दिया। प्राचार्य डॉ एस संतोष बाबू ने कहा कि “भारत की सभी भाषाओं में प्रचुर साहित्य मौजूद है। हम सभी को इससे सीख लेनी चाहिए।” विभागाध्यक्ष डॉ अशोक कुमार द्विवेदी ने अपने स्वागत वक्तव्य में सबका स्वागत करते हुये “गीता की उपयोगिता” पर बृहद प्रकाश डाला।

चेन्नई शहर के अलावा देश के अन्य प्रदेशों से भी अनेक विद्वानों व विद्वियों ने अपना प्रपत्र पढ़ा। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डॉ वासुदेवन व डॉ राजलक्ष्मी ने भी इस सेमिनार में भाग लिया। कुल मिलाकर यह सेमिनार बहुत ही ज्ञानप्रद व सफल रहा।

“बीपीए फाउंडेशन” व “इंडिया नेटबुक्स” के संस्थापक एवं साहित्यकार डॉ. संजीव कुमार तथा उनकी धर्मपत्नी डॉ. मनोरमा जी द्वारा नई दिल्ली के क्राउन प्लाज़ा होटल में, “बीपीए फाउंडेशन एवं इंडिया नेटबुक्स सम्मान २०२४” का एक भव्य समरोह आयोजित किया गया जिसमें उद्घाटन सत्र के मंचासीन लब्ध-प्रतिष्ठ वरिष्ठ साहित्यकार एवं गणमान्य व्यक्ति थे : न्यायमूर्ति जस्टिस एस. एन. श्रीवास्तव - भूतपूर्व जज इलाहाबाद हाईकोर्ट एवं प्रमुख लोकायुक्त (छत्तीसगढ़), श्रीमती चित्रा मुद्दल - वरिष्ठ साहित्यकार, श्री राहुल देव - वरिष्ठ पत्रकार, श्री विकास दवे - निदेशक म.प्र. साहित्य अकादमी, श्री मुकेश भारद्वाज - वरिष्ठ पत्रकार, सम्पादक जनसत्ता, प्रो. डॉ. राजेश कुमार - वरिष्ठ साहित्यकार, तथा अन्य सत्र - साहित्य रत्न सम्मान (प्रवासी साहित्य) सत्र के मंचासीन लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार एवं गणमान्य व्यक्ति थे : श्री संदीप मारवाह - निदेशक मारवाह फिल्म एकेडेमी, श्रीमती ममता कालिया - वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. मनोरमा - वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. कामिनी - व्यवस्थापक इंडिया नेट बुक्स, प्रो. डॉ. राजेश कुमार - वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. संतोष खन्ना - वरिष्ठ साहित्यकार एवं सम्पादक “विधि भारती”, डॉ. हरिसुमन बिष्ट - भूतपूर्व सचिव दिल्ली साहित्य अकादमी, वरिष्ठ साहित्यकार, श्री लालित्य ललित - उप सम्पादक नेशनल बुक ट्रस्ट, वरिष्ठ साहित्यकार, श्रीमती नासिरा शर्मा - वरिष्ठ साहित्यकार।

मैं, डॉ. संजीव कुमार जी एवं प्रो. डॉ. राजेश कुमार जी का हार्दिक आभार प्रगट करना चाहूँगी कि उन्होंने इस सुअवसर पर मुझे एक गौरवपूर्ण सम्मान “साहित्य रत्न सम्मान (प्रवासी साहित्य)” से सम्मानित किया। इस सम्मान हेतु वरिष्ठ साहित्यकार, अनुज श्री उमेश मेहता जी की भी आभारी हूँ। यहाँ तक कि कहीं और अपनी अतिरिक्त व्यस्तता में भी वे कुछ समय मेरे साथ रहे।

डॉ. संजीव कुमार जी ने “अंतर्राष्ट्रीय वामा संस्कृति एवं साहित्य अकादमी” (avsa) भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के उत्थान की नवचेतना हेतु संस्था की हाल ही में स्थापना की है, जिस हेतु उन्हें हार्दिक बधाई। मुझे भी इसका हिस्सा बनाने हेतु आभार।

डॉ. चंदना राउल द्वारा उनकी संस्था “अक्स” के अंतर्गत “इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दिल्ली” के सभागार में “नारी दिवस २०२४” के उपलक्ष्य में अनेक संस्थाओं की नृत्य-नाटिकाओं द्वारा “भूमि पुत्र बीजू पटनायक

इंटरनेशनल वीमेन इम्पॉवरमेन्ट अवार्ड सेरेमोनी एण्ड कल्चरल प्रोग्राम” का भव्य आयोजन हुआ जिसके अंतर्गत मुझे “भूमि पुत्र बीजू पटनायक इंटरनेशनल वीमेन इम्पॉवरमेन्ट अवार्ड 2024” से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही साथ संस्था की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे “कीनोट स्पीकर” के रूप में भी चयनित कर सम्मानित किया। दोनों ही रूपों में डॉ. चंदना राउल एवं “अक्स” संस्था का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

“अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2024” के अवसर पर “हिन्दी की गूँज” अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका टोक्यो जापान की, “जापान हिन्दी कल्चरल सेंटर” की संस्थापिका माननीया श्रीमती रमा शर्मा जी की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे “सशक्त महिला” के सम्मान से सम्मानित किया। हार्दिक धन्यवाद।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ही एक सशक्त महिला अरुणा धवल जी ने डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा, जो विद्वान तो हैं ही, साथ ही पारिवारिक रूप से भी हमसे जुड़े हुए हैं, की अध्यक्षता में एक भव्य आयोजन हुआ। जहाँ सभी ने बढ़-चढ़ कर अपनी बात कही और कार्यक्रम को सफल बनाया, वहाँ पारिवारिक मित्र शैल जी, मोहन कान्त जी, विवेक जी और शिव जी की उपस्थिति ने आनंदित किया। इस कार्यक्रम में मुझे सम्मिलित करने के लिए अरुणा जी का हार्दिक आभार।

१८ मार्च को IGSI (इंटरनेशनल गुड विल सोसाइटी ऑफ इंडिया) के दिल्ली चैप्टर ने जहाँ IGSI के संस्थापक स्वर्गीय माननीय डॉ. नागेन्द्र जी का जन्मदिवस मनाया वहीं होली का त्योहार व महिला सशक्तिकरण दिवस भी मनाया और मेरा सौभाग्य है कि मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। प्रोग्राम की संयोजिका डॉ. ऋचा सिंह जी जो संस्था की सह-सचिव हैं, ने बहुत ही प्रभावशाली रूप में संचालिका का कार्यभार निर्वाहित किया। अध्यक्ष श्री ब्रह्म दत्त शर्मा जी जो हैं तो भूतपूर्व आई.ए.एस. ऑफिसर पर समाज के बिंगड़लू वर्ग के साथ-साथ अध्यात्म पर भी उनकी अच्छी पकड़ है, संस्था के सचिव श्री दीनदयाल अग्रवाल जी जो अपने कठोर परिश्रम से संस्था को अप्रतिम ऊँचाई तक ले जाने में सफल हुए हैं, माननीय श्री महेश शर्मा जी जिनका हर बात में सहायक के रूप में व्यक्तित्व आपको आकर्षित करता है, प्रो. डॉ. नीलम जी जो न केवल ज्ञान वरन् अपने स्नेहिल स्वभाव से भी आपको प्रभावित करती हैं और अन्य सभी उपस्थित विद्वान, विद्यार्थी वर्ग, प्रत्येक ने इस संध्या को चिर-स्मरणीय बना दिया। उस दिन उपस्थित उस संस्था के सभी व्यक्तियों ने स्नेह को जो स्नेह दिया वह अमूल्य था। संस्था के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा एवं डॉ. सुनंदा वर्मा की नई पुस्तक “विश्व हिन्दी के भगीरथ – प्रवासी हस्ताक्षर” अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है। विमलेश जी व सुपुत्री सुनंदा को बधाई व अनेकानेक शुभकामनाएँ। यह बहुत ही महत्वपूर्ण पुस्तक है। आगामी अंक में इस पर चर्चा होगी।

विमलेश कान्ति वर्मा जी की प्रबुद्ध शिष्या डॉ. दीपि अग्रवाल एवं उनके साहित्य-प्रेमी पति श्री कपिल जी ने अपने निवास-स्थान पर विमलेश जी के सान्निध्य में मुझे सम्मानित करते हुए एक भव्य व्यक्तिगत् साहित्यिक संध्या का आयोजन किया। समय इस तरह से गुजरा कि निशा ने कब संध्या का आँचल पकड़, उसे निष्कासित कर, अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया, पता ही नहीं चला। तीनों के प्रति ही हृदय से आभारी हूँ।

वैश्विक हिन्दी सम्मेलन के डॉ. एम.एल. गुप्ता जी की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे महिला दिवस पर अपने भारतीय-भाषा सेवी महिलाओं के पोस्टर में शामिल किया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी और हंस प्रकाशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित, पुस्तक लोकार्पण एवं परिचर्चा के अंतर्गत लेखक प्रो. सत्यकेतु सांकृत, डीन ऑफ अकादमिक अफेयर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली, के कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित होने हेतु सत्यकेतु जी, महेंद्र प्रजापति जी एवं आसिफ खान जी का आभार व्यक्त करती हूँ। डॉ. सांकृत सत्यकेतु जी को उनकी पुस्तकों हेतु हार्दिक बधाई। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी कलम अनवरत चलती रहे।

“विश्व हिन्दी संगठन” नई दिल्ली एवं “लोक बात यूट्यूब चेनल” के संयुक्त तत्वावधान में होली के पावन पर्व पर एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया

गया था। परिचितों में डॉ. कृतु माथुर व डॉ. कृतु नंनन भी थीं। अन्य सभी लब्ध-प्रतिष्ठित प्रतिभागी कवि-कवयित्रियों ने सम्मेलन को बहुत ही रोचक, कर्णप्रिय बनाया। अध्यक्ष आलोक रंजन पाण्डेय एवं सम्मेलन से सम्बन्धित सभी आयोजकों/कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद।

“पोइट्री एण्ड लिटरेरी ग्रुप इंटरनेशनल” की सिमी कुमारी जी ने अपने “कवि सम्मेलन मुशायरा” में मुझे “गेस्ट ऑफ ऑनर” के रूप में आमंत्रित किया। मेरे लिए इस ग्रुप में सभी अपरिचित थे, पर सभी ने इतनी अच्छी, भावनात्मक कविताओं और शायरी से मन मोह लिया कि ग्रुप अपना बनकर रह गया। सिमी जी का धन्यवाद एवं आभार।

प्रिय सखी मधु वर्मा जी के सौजन्य से चलचित्र के चिर-परिचित चेहरे आशुतोष राणा जी का नाटक “हमारे राम” देखने का सौभाग्य मिला जिसमें राहुल जी ने श्रीराम और आशुतोष जी ने रावण की अद्वितीय भूमिका निभाई। वास्तव में “हमारे राम” के प्रत्येक पात्र ने अपनी-अपनी भूमिका के साथ सम्पूर्ण न्याय किया है, अद्वितीय भूमिका का प्रदर्शन किया। नाटक सम्पन्न होने पर आशुतोष जी, राहुल जी से इस सम्बन्ध में कुछ सारगर्भित वार्तालाप भी हुआ। दोनों ने ही अपनी शालीनता से अभिभूत किया। आशुतोष जी का उपन्यास “रामराज्य” भी पढ़ने का सौभाग्य मिला। चूँकि मेरे उपन्यास भी उस काल पर आधारित हैं – “लोक-नायक राम” जिसके चार संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, “कैकेयी चेतना-शिखा” म.प्र. साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत, चार संस्करण प्रकाशित, “श्रीरामप्रिया सीता”, “दशानन रावण”, सद्यः प्रकाशित “मरुतनन्दन हनुमान” व इसी दिशा में वाल्मीकि, तुलसी, अध्यात्म रामायण पर प्रकाशित शोध ग्रंथ आदि ने वार्तालाप को ज्ञानवर्धक और सरस बना दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में आयोजित, नागरी लिपि के महामंत्री हरि सिंह जी एवं हंस राज कॉलेज की प्राचार्या डॉ. रमा शर्मा जी के संयुक्त तत्वावधान में नागरी लिपि परिषद् की स्वर्ण-जयंती के शुभ-अवसर पर सम्पन्न हुये कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित हुई। मैं हरिसिंह जी और रमा जी, दोनों के ही प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। अरुण जी के संचालन में मंचासीन अध्यक्ष डॉ. पतंजलि जी, हरिसिंह जी, डॉ. रमा जी, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भारत सरकार, आगरा और केंद्रीय हिंदी निदेशालय नई दिल्ली के निदेशक डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी जी, प्रो. किरण हजारिका सम कुलपति, इश्वर, नई दिल्ली, तथा दूसरे सत्रों के गणमान्य डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा जी, डॉ. नारायण कुमार जी, श्रीमती संतोष खन्ना जी, डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी, डॉ. शकुंतला जी व अनेक अन्य गणमान्य व्यक्तियों एवं मेधावी छात्र-छात्राओं की उपस्थिति में कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

“काव्य गरिमा साहित्यिक मंच” पर “साहित्यिक टॉक विद गरिमा” के अंतर्गत विस्तार में, करीब दो घंटे में एक बहुत ही सारगर्भित साक्षात्कार सम्पन्न हुआ। गरिमा जी ने जहाँ एक ओर मेरे साहित्य के सभी पक्षों को खंगोला, उस पर विस्तृत चर्चा की, वहीं आज के साहित्य पर भी चर्चा हुई। विशेष रूप से नवीन रचनाकारों से सम्बन्धित चर्चाएँ भी हुईं। यह साक्षात्कार रेडियो, यूट्यूब, ज़ूम, फ़ेसबुक और इंस्टाग्राम पर भी दिखाया गया। जिस शालीनता और सम्मान के साथ गरिमा जी ने यह साक्षात्कार लिया, उनके प्रति स्नेहसिक्त सम्मान के साथ आभार व्यक्त करती हूँ।

सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने स्नेह को इतना स्नेह दिया, आदर-सम्मान दिया। ईश्वर करे हम-सबका साहित्यिक सम्बन्ध अटूट रहे। हम सब, साहित्यिक-परिवार मित्रवत् एकजुट हो भारत माता की, साहित्य की सेवा में तल्लीन रहें।

वसुधा के सभी साहित्यकारों एवं पाठकों को शुभकामनाओं सहित वसुधा का यह अंक समर्पित,

स्नेह,

स्नेह ठाकुर





रघुनायक के प्रति

डॉ. कृष्ण माथुर

हे कृपानिधान, दीनदयाल, भक्त रक्षक;
सर्वशत्रु विनाशक, मोक्षदायक मंगलतक्षक।

सर्वसृष्टा, सर्वज्ञ, सर्वांग दृष्टिधारक;
अनंत अगोचर, अविकारी अविनाशक।

शरणात्राण, खरद्धवंसी, दशाग्रीव संधारक;
पित्रभक्त, कौशलेय, विश्वामित्र-प्रिय हरकोदंड खंडक।

सर्वहितैषी, त्रिलोकरक्षक, कष्ट निवारक;
सुजन हित हेतु, दुर्जन नाशक।

लौकिक, अलौकिक दंड विधायक;
सत्यरूपी, शुभकारक, शिरोभूषण के धारक।

परमानंद, परमाद्विवि, शुभ प्रतिपादक;
अनादि आगम सृष्टि नियामक।

परमोत्कर्ष, परिदर्शन विश्व परिधायक;
अद्वूर हृदय, महा फलदायक।

कृष्ण नियंत्रक, भारग्य निर्णायक;
अक्षय नमन तुम्हें रघुनायक।



अध्याय १८- मोक्ष, सन्यास योग

अविनाश कुमार

गीता के इस अंतिम अध्याय में श्री कृष्ण मोक्ष और त्याग का निरूपण करते हुए कर्म के पाँच प्रेरक > अधिष्ठान, कारण, कर्ता, चेष्टा व संस्कार एवं तीन प्रकार के ज्ञान, कर्म, कर्ता, बुद्धि, संकल्प और सुखों का बखान करते हैं। वे मनुष्य के वर्णों के मूल स्वभाव के आधार पर कर्म का विभाजन करते हैं।

अर्जुन उवाच - हे केशव, हे देवकीनन्दन, यह बतलाएँ आप	(०१)
त्याग और सन्यास का, कैसे हो मेल मिलाप	
कृष्ण उवाच - त्याग और सन्यास में, त्याग के गुण बतलाता हूँ	
तीन तरह के त्याग की तुल्यको, मैं गाथा सुनाता हूँ	(०४)
कर्म तू जिसका उत्तरदायी, तजना उसका पाप	
मोह जो भूले मूल कर्म को, दे अंध कीर्ति छाप	(०७)
कर्म क्रिया और श्रम को जो भी, कष्ट समझता जाए	
ऐसे त्यागे कर्म का अर्जुन, कभी न फल वो पाये	(०८)
सब कर्मों का त्याग करे जो, असम्भव है देहधारी	
कर्म के फल का त्याग परंतु, हरी प्रेम अधिकारी	(११)
सिद्ध हो जिससे कर्म सभी, पाँच हैं वो सिद्धान्त,	
सुन मुझसे, हे अर्जुन, कैसे कर्म पाएँ सुखांत	(१३)
कर्म चाहे अधिष्ठान, कारण, कर्ता आकार	
नाना प्रकार की चेष्टा, और दैवीय संस्कार	(१४)
तीन तरह के ज्ञान भए, कर्म व कर्ता तीन	
कर्म दुकर्म की गाथा इसी, गुण गंगा के अधीन	(१९)
जिस ज्ञान के द्वारा जग में, ईश्वर दिखे अपार	
वह सात्त्विक और बुद्धि शील है, वह ज्ञान मोक्ष का द्वार	(२०)
किन्तु ज्ञान जो प्राणी-प्राणी में, नाना रूप दिखलाए	
राजस समझो ऐसे ज्ञान को, मोह की ओर ले जाए	(२१)
और यदि निज काय ग्रहण में, ज्ञान है ध्यान रमाए	
तामस है वह ज्ञान, पतन की, ओर शीघ्र ले जाए	(२२)
इसी तरह, वह कर्म है सात्त्विक, शास्त्र नीति अपनाए	
राग द्वेष फल अहं से वंचित, आगे मनुष्य बढ़ाए	(२३)
कर्म में हो यदि फल की इच्छा, संग अहं दर्शये	
राजस है वो, नश्वर है, कर्म गति ना पाये	(२४)
जिस कर्म में मोह बसे, न ध्यावे जो परिणाम	
हिंसा हानि तामस कहलावे, ऐसे कर्म के नाम	(२५)

कर्ता सात्त्विक की मुझसे, सुन लो अब पहचान राग रहित, धृतिशील रहे, सिद्धि असिद्धि समान कर्म फलों की इच्छा राखे, शोक-हर्ष जो बरते हिंसा का वे मूल भए, राजस उनको कहते	(२६)
तामस है वो कर्ता जिसकी, बुद्धि हो अज्ञान, अहं, आलसी, हठी, विषादी, गुण उसकी पहचान हे अर्जुन! मैं तुझसे कहता, बुद्धि, धैर्य के गुण	(२७)
तीन तरह के भेद बताऊँ, बात मेरी जो सुन बुद्धि जो प्रवृत्ति-अप्रवृत्ति भेद समझाये	(२८)
भय-अभय, व मोक्ष दिखाये, सात्त्विक वह कहलाए धर्म अधर्म का भेद ना जाने, कर्म अकर्म झुठलाए	(२९)
राजसी जानो तीस बुद्धि को, राज द्वेष फैलाये और अधम को धर्म है जाने, उल्टी ओर ले जाए,	(३०)
ऐसी अंधी बुद्धि तो, जग में तामसिक कहलाए सात्त्विक है धैर्य वही जो, ग्रहण सहज कर जाये	(३१)
मन, प्राण, इंद्रिय वश रखे, और सभी क्रियाएँ धैर्य यदि हो, फल के कारण, काम भोग धन हेतु	(३२)
राग धरे, आसक्त भाव वह, राजस समझ उसको तू शोक, विषाद, भय उर लाये, तामस धृति पहचान	(३३)
धैर्य नहीं, वह पैदा करता, दुष्ट बुद्धि अभिमान तीन प्रकार के सुख हैं होते, सुन अर्जुन अज्ञान	(३४)
चिर-अभ्यास वे दुख हैं हरते, हरिपद देते प्रदान विष के जैसे पूर्व जलाते, फल अमृत के समान	(३५)
हरि प्रेम उर मूल समाते, सात्त्विक कहे विद्वान इंद्रियों आसक्ति योग युक्त, अमृत-सी पहचान,	(३६)
राजस हैं वे सुख जो बरते, अंततः विष के समान आदि और अंत तक भावे, निद्रा अहं आलस्य बढ़ावे	(३७)
सुख रूपी दुख घर लावे, तामसी सुख वह कहलावे तीन लोक मे, न कोई वस्तु, पृथ्वी न आकाश	(३८)
इन गुणो से मुक्त रही है, सबमें इनका वास सहज करम मे दोष भए तो, न कर उसका त्याग,	(३९)
हरेक कर्म मे दोष रचित है, संग धुआँ के आग	(४०)
अंततः प्रभु कहते हैं कि अपने मूल स्वभाव कर्म को तजना न केवल असम्भव है, बल्कि अधर्म है। कर्म में व्याप परिश्रम को भी जो तजता है, वह आलस्य के अधीन हो कर तामसी प्रवृत्ति को प्राप्त होता है। प्रभु सत्कर्म के	(४८)

पाँच गुणो से भी अवगत कराते हैं और ज्ञान, कर्ता, कर्म बुद्धि, धैर्य, सुख के सात्त्विक, राजसी और तामसिक गुणों से परिचय कराते हैं।

यदि तू अपने अहं के कारण, दूर युद्ध से जाएगा	(५९)
धरम हीन होगा वह निर्णय, क्षत्र तुझे लड़वाएगा	
क्षत्र भाव होते भी यदि तू, मोह से कर्म भुलाएगा	(६०)
तेरा मूल धरम ही तुझसे, यही युद्ध करवाएगा	
ईश भया हर प्राण हृदय में, माया अपरम्पार	
निज भाव ज्यों भाग विराजे, यंत्र शरीर को धार	(६१)
गूढ़ से भी गूढ़ ज्ञान है, मैंने तुझको वर्ता	
ऐसे ज्ञान से पोषित होकर, देखूँ क्या तू करता	(६३)
हे अर्जुन! इस गीत को मेरे, क्या धैर्य ध्यान सुन पाया	
मोह जो पैदा हुआ था पहले, क्या वह नष्ट हो पाया	(७२)
अर्जुन बोले, हे केशव! मैं, मोह रहित हूँ ज्ञानी	
मात्र आप की आज्ञा का, मैं हूँ अब अनुगामी	(७३)

संजय उवाच -

संजय बोले धृतराष्ट्र से, मैंने, सुने ये अद्भुत वचन,	(७४)
एक तरफ थे जिसके केशव, दूसरी ओर अर्जुन	
कृपा व्यास की, जिसके द्वारा, गीत मैं यह सुन पाया	(७५)
इह लोक तो पूरा पाप भया, उहलोक मेरा तर जाया	
हे राजन, यह गीत को सुन, मन हर्षित होता जाए,	
ऐसे पवित्र वचन हरि ने, स्वयं अर्जुन को सुनाये	(७६)
ऐसे धरम वचन सुनने पर, मति मेरी भी यही	
जिधर विराजे कृष्ण और अर्जुन, होगी जीत वहाँ	(७८)

अंत मे संजय के मुख से हरि ने यह संदेश दिया है कि जिधर अर्जुन जैसा उत्सुक, ज्ञानेय शिष्य और कृष्ण जैसी ज्ञान की गंगा होगी, वहाँ विजय अवश्य होगी।



अखिल विश्व के स्वामी राम

सुशील शर्मा

अखिल विश्व के स्वामी राम
भक्तों के अनुगामी राम

माँ कौशल्या के राजदुलारे।
कैकई माता के हैं प्यारे।
नेह भरी सुमित्रा माई।
लखन शत्रुघ्न के हैं भाई।
भाई भरत के प्राणाधार।
दशरथ का जीवन संसार।
अवधपुरी के स्वामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।

राक्षस प्राणों के विध्वंसक।
विश्वामित्र यज्ञ के रक्षक।
डरे हुए कृषियों के बीच।
वधे ताङ्का अरु मारीच।
कृषि मुनियों के तारणहार।
राम सत्य के अवतार।
सदा धर्म पथगामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।

शिवपिनाक के प्रभु हैं भंजक।
सिय सपनों के श्री प्रभु रंजक।
जनक कष्ट के प्रभु हैं हर्ता।
जनकनंदनी के प्रभु भर्ता।
राम सिया विवाह अति पावन।
मर्यादा रत अति मन भावन।
सीय हृदय के स्वामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।

बनी निमित्त मंथरा दासी।
कोप भवन की कैकई वासी।
भरत राज्य राम वनवासी।
अवधपुरी में भरी उदासी।
छोड़ा राज्य लोक हित साधा।
चले प्रभु हरने सब बाधा।
मर्यादा पथगामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।

ऋष्यमूक पर्वत के वासी।
हनुमान अविचल अविनासी।
राम नाम के हनुमत रसिया।
राम प्रभु हनुमत मन बसिया।
सीताखोज लंक को जारा।
राम नाम पर सब कुछ बारा।
संकट मोचक स्वामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।

राम सेतु चढ़ लंका आये।
वानर लंका दुर्ग ढहाए।
रावण मेघनाथ संहारे।
असुर समूल नष्ट कर सारे।
अवधपुरी में राम पधारे।
राम सत्य संकल्प हमारे।
हम सबके मन स्वामी राम।
भक्तों के अनुगामी राम।



आखिर क्यों नरेंद्र मोदी को देश तीसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहता है

प्रभात ज्ञा
(पूर्व सांसद एवं पूर्व भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष)

२१ अक्टूबर १९५१ को जनसंघ की स्थापना हुई थी। १९५२ में पहला आम चुनाव हुआ था और उस चुनाव में जनसंघ के तीन लोग जीते थे। कोलकाता दक्षिण पूर्व सीट से श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मिदनापुर झारग्राम सीट से दुर्गा चरण बनर्जी और चित्तौड़ राजस्थान से उमाशंकर त्रिवेदी। जनसंघ के घोषणापत्र में मुख्यतः दो मुद्दे थे। देश में समान नागरिक संहिता लागू करना तथा जम्मू-कश्मीर से धारा ३७० को खत्म करना। चुनाव के बाद उस समय भी एनडीए बना तथा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रतिपक्ष के नेता बने। संसद में अपने भाषण में उन्होंने धारा ३७० को समाप्त करने की भी जोरदार वकालत की। अगस्त १९५२ में जम्मू कश्मीर की विशाल रैली में उन्होंने अपना संकल्प व्यक्त किया था कि या तो मैं आपको भारतीय संविधान प्राप्त कराऊँगा या फिर इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपना जीवन बलिदान कर दूँगा। डॉ. मुखर्जी अपने संकल्प को पूरा करने के लिये १९५३ में बिना परमिट लिये जम्मू-कश्मीर की यात्रा पर निकल पड़े। परमिट का नियम तोड़ते हुए उन्होंने हजारों प्रदर्शनकारियों के साथ ११ मई १९५३ को जम्मू-कश्मीर में प्रवेश करने का निर्णय किया। जम्मू में प्रवेश करते ही तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के तानाशाही रवैये के कारण वहाँ की तत्कालीन शेख अब्दुल्ला सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। २३ जून १९५३ को जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी। लेकिन जेल में उनकी मृत्यु ने देश को हिलाकर रख दिया और परमिट सिस्टम भी समाप्त हो गया।

जनसंघ का कारवाँ आगे बढ़ता गया। १९५७ के आम चुनाव में जनसंघ को ४ सीटें मिली। १९६२ में १४, १९६७ में ३५ और १९७१ में २२ सीटें मिली। १९७५ में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लागू कर दिया। आपातकाल का जनसंघ ने खुलकर विरोध किया। जनसंघ से जुड़े सभी नेताओं को इसके लिए जेल जाना पड़ा और यातनाएँ सहनी पड़ी। इसमें सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक भी प्रमुखता से शामिल थे। सन् १९७७ में जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हुआ लेकिन 'दोहरी सदस्यता' (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता) को लेकर जनसंघ के नेताओं ने जनता पार्टी से रिश्ता समाप्त कर नए राजनीतिक पार्टी के गठन का निर्णय लिया। भारत को एक समर्थ राष्ट्र बनाने और पंच निष्ठाओं (राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, सामाजिक और आर्थिक विषय पर गांधीवादी दृष्टिकोण, सकारात्मक पंथनिरपेक्षता और मूल्यों पर आधारित राजनीति) के आधार पर ६ अप्रैल १९८० को अटल बिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई। अपनी स्थापना के साथ ही पार्टी ने अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय एवं लोकहित के विषयों पर मुखर रहते हुए भारतीय लोकतंत्र में अपनी सशक्त भागीदारी दर्ज की तथा भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए।

१९८४ का आम चुनाव भारतीय जनता पार्टी के लिए पहला आम चुनाव था जिसमें पार्टी को २ सीटें मिलीं। गुजरात की मेहसाणा से अशोक पटेल और आंध्र प्रदेश की हनमकोंडा सीट से जंगा रेड़ी। १९८६ में लालकृष्ण आडवाणी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और जून १९८९ के पालमपुर अधिवेशन में पहली बार अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर के निर्माण का प्रस्ताव पारित किया गया। राममंदिर निर्माण को भारतीय जनता पार्टी ने अपने मुख्य राजनीतिक एजेंडे में रखा और अपने चुनावी घोषणा पत्र में शामिल किया। १९८९ के आम चुनाव में २ सीटों से बढ़कर भारतीय जनता पार्टी ८५ सांसदों वाली पार्टी बन गई। मार्च १९९० में एक साथ भारतीय जनता पार्टी की तीन राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में

सरकार बनीं। भैरोंसिंह शेखावत राजस्थान, सुंदर लाल पटवा मध्य प्रदेश और शांता कुमार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। यह पहली बार था जब भारतीय जनता पार्टी का किसी भी राज्य में अपना मुख्यमंत्री बना था।

२५ सितम्बर १९९० को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर लालकृष्ण आडवाणी ने गुजरात के सोमनाथ से अयोध्या तक के लिए राम-रथ यात्रा शुरू की। राम मंदिर के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार को लेकर भारतीय जनता पार्टी भारत के घर-घर पहुँची। १९९१ में पार्टी के अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी बने और १९९१ के आम चुनाव में पार्टी की लोक सभा में सीटों की संख्या बढ़कर ८५ से १२० पहुँच गई। १९९६, १९९८ और १९९९ के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। अटल बिहारी वाजपेयी पहले १३ दिन, फिर १३ माह के लिए प्रधानमंत्री बने और इसके बाद एक बार फिर साढ़े चार साल तक देश के प्रधानमंत्री रहे और देश के विकास को नई दिशा दी। भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं होने के कारण भले ही अटल बिहारी वाजपेयी अपनी विचारधारा के संकल्पों को साकार नहीं कर पाए। लेकिन एक समर्थ भारत का निर्माण कर बहुमत मिलने पर संकल्पों को साकार करने का आश्वासन देश को उन्होंने जरूर दिया। २००४ में मनमोहन सिंह के नेतृत्व में काँग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए की सरकार आई। लेकिन १० वर्षों में भ्रष्ट कमज़ोर और पॉलिसी पैरालिसिस उस सरकार की पहचान बन गई। देश की जनता ने संकल्प लिया और भारतीय लोकतंत्र ने एक सुनहरे भविष्य के लिए करवट लिया।

१२ वर्ष गुजरात का मुख्यमंत्री रहते हुए नरेंद्र मोदी ने देश और दुनिया को एक ऐसा विकास मॉडल दिया जिसे गुजरात का विकास मॉडल के रूप में जाना जाने लगा। भारत के जनमानस और भारतीय जनता पार्टी ने उनमें भविष्य के भारत को देखा। २०१३ के गोवा अधिवेशन में भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने नरेंद्र मोदी को २०१४ के लोक सभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी चुनाव अभियान का प्रमुख बनाने की घोषणा की। बाद में उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार भी घोषित किया गया। २०१४ के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को २८२ सीटों के साथ पूर्ण बहुमत मिला। देश की जनता द्वारा इतिहास रचा गया। नरेंद्र मोदी पहली बार पूर्ण बहुमत वाली, गैर काँग्रेसी किसी पार्टी के प्रधानमंत्री बने। इसके बाद पार्टी की एक के बाद एक कई राज्यों में सरकार बनती गई। मार्च २०१८ तक बीजेपी २१ राज्यों तक पहुँच चुकी थी। २०१९ के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने २०१४ से भी बड़ी और ऐतिहासिक जीत हासिल की। इस चुनाव में पार्टी ने ३०३ सीटें जीतीं और यह पहली बार था जब किसी गैर काँग्रेसी पार्टी को दूसरी बार बहुमत मिला था।

दो बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने जनसंघ के जमाने से घोषणा पत्र में शामिल और देश की जनता से किये गए सभी वादों को पूरा किया। अपने दूसरे कार्यकाल के पहले संसद सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ५ अगस्त २०१९ को धारा ३७० समाप्त कर दिया। इसी मानसून सत्र में ही समान नागरिक संहिता की दिशा में कदम आगे बढ़ाया गया। उसी तीन तलाक को दंडनीय अपराध बनाया गया और मुस्लिम माताओं-बहनों को इस काले कानून से मुक्ति दिलाई। नागरिकता संशोधन कानून २०१९ को लागू किया गया। एक तरह से महात्मा गांधी के विचार को साकार किया गया, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ। २२ जनवरी २०२४ को भारतीय जनता पार्टी ने अपना वादा पूरा किया और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों मंदिर में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा हुई। आज देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन राम लला का दर्शन करने आ रहे हैं। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा समान नागरिक संहिता को लागू करने की दिशा में भी आगे बढ़ रही है। उत्तराखण्ड की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने सबसे पहले समान नागरिक संहिता लागू कर इतिहास बना दिया है।

भारतीय जनता पार्टी पर पहले आरोप लगता था कि पार्टी सरकार नहीं चला पाती। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में पूर्ण बहुमत की भाजपा की सरकार है और कई राज्यों में भाजपा की सरकार विकास और जन कल्याण के नए-नए आयाम गढ़ रही है। देश की राजनीतिक संस्कृति बदल गई है। देश और देश

का जन मानस को आज मोदी की गारंटी पर विश्वास है और उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के संकल्प के नाम पर आगे बढ़ रहा है। शोषणमुक्त और समतायुक्त समाज की स्थापना के साथ आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण को संकल्पित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह पहला लोक सभा का चुनाव है जब देश ही नहीं पूरे विश्व ने यह मान लिया है कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। जिसका परिणाम पहले से ही तय हो गया है। यह भाजपा नहीं देश की १४० करोड़ जनता कह रही है। मोदी की गारंटी ने देश के विश्वास को जीतने का काम किया है।

पिछले १० वर्षों में देश के २५ करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर लाया गया है। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पहले भारत १९वें नम्बर की अर्थव्यवस्था थी। ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ भारत आज दुनिया की ५वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर तेजी से अग्रसर है। मनमोहन सिंह की यूपीए की सरकार के समय २०१३-१४ में देश का बजट १६.६५ लाख करोड़ था जो कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बढ़कर २०२४-२५ में ५० लाख करोड़ हो गया है। ५० करोड़ से अधिक गरीबों के जन-धन खाते खुलवाए गए हैं। स्वच्छता अभियान के तहत ११ करोड़ परिवारों के लिए शौचालय बनवाए गए हैं। पीएम आवास योजना के तहत ज्यादतर मकान महिलाओं के नाम पर पंजीकृत हैं। जल जीवन मिशन योजना के माध्यम से देश के १४.४५ करोड़ से अधिक ग्रामीण घरों में नल से जलापूर्ति की गई है। आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीबों को ५ लाख की मुफ्त चिकित्सा सुविधा दी गई है। इस योजना के दायरे में ७० वर्ष से ऊपर के सभी लोगों को लाये जाने की घोषणा की गई है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से देश के करीब ८० करोड़ लोगों को मुफ्त राशन मिल रहा है। उज्ज्वला योजना के तहत ११ करोड़ से अधिक महिलाओं को गैस सिलिन्डर प्रदान कर उनके जीवन को धुआँ-मुक्त बनाया गया है। वहीं विशेषकर ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए ३ करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया है। नारी वंदन अधिनियम लाकर लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के लिए ३३ प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया।

स्टार्टअप और स्टैंडअप योजना के तहत करोड़ों युवाओं को रोजगार मिला है। रोजगार की तलाश करने वाले आज रोजगार देने वाले बन रहे हैं। स्किल इंडिया के तहत करोड़ों युवाओं का कौशल विकास किया गया है। और इस प्रकार लाखों परिवार का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है। करोड़ों लोगों को उद्यमी बनाने का काम मुद्रा योजना ने किया है और इसकी सफलता को देखते मुद्रा लोन की राशि को १० लाख से २० लाख किये जाने की घोषणा की गई है। पीएम स्वनिधि योजना के तहत रेहड़ी-पटरी चलाने वालों को ब्याजमुक्त लोन देकर उनकी चिंता की गई है। ३६ लाख करोड़ रुपये डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर से लोगों के खाते में भेजे गए हैं। वित्तीय समावेशन की यह दुनिया में मिसाल है। यह अभियान जन धन खाता खोले जाने से ही सम्भव हो पाया है। यह सब पहले भी हो सकता था। लेकिन इनकी चिंता देश में पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की है। भारतीय जनता पार्टी सरकार ने की है।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत देश के १० करोड़ से अधिक छोटे और सीमान्त किसानों को आर्थिक सहायता दी जा रही है। किसानों की आय दोगुनी करने और स्वामीनाथन आयोग के सुझावों के अनुरूप उनके उपज को उचित मूल्य मिले, इसके लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। पिछले १० वर्षों में लगभग १८ लाख करोड़ रुपए एमएसपी के रूप में धान और गेहूँ की खेती करने वाले किसानों को मिले हैं। जो यूपीए सरकार के १० सालों की तुलना में ढाई गुना अधिक है। गाँवों में पौने ४ लाख किलोमीटर नई सड़कें बनी हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत १३०० से ज्यादा रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प हो रहा है। वंदे भारत और बुलेट ट्रेन चलाये गए हैं। पिछले १० वर्षों में देश में नेशनल हाईवे की लम्बाई ९० हजार किलोमीटर से

बढ़कर १ लाख ४६ हजार किलोमीटर हो गई है। फोर लेन नेशनल हाईवे की लम्बाई ढाई गुना बढ़ी है। देश में एयरपोर्ट्स की संख्या ७४ से दोगुनी बढ़कर १४९ हो गई है। शहरों के ट्रांसपोर्ट में कई क्रांतिकारी बदलाव किए गए हैं। २०१४ तक सिर्फ ५ शहरों में मेट्रो कनेक्टिविटी थी। अब देश के १८ शहरों में मेट्रो की सुविधा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हर हफ्ते एक नए विश्वविद्यालय का उद्घाटन किया जाता है। और पिछले एक दशक से प्रतिदिन दो नए कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त हर दिन औसतन ५५ पेटेंट पंजीकृत होते हैं। जिससे नवाचार और प्रगति को बढ़ावा मिलता है। देश आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश के विकास के साथ-साथ विरासत के संरक्षण और संवर्धन की भी चिंता की गई है। देश एक प्रकार से आज सांस्कृतिक पुनर्जागरण के काल में है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण और काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, उज्जैन में महाकाल लोक, केदारनाथ सौंदर्यकरण चार धाम परियोजना इसकी मिसाल हैं। विदेशों से मूर्तियाँ वापस लाई गईं। अनेकों मंदिरों व विरासत स्थलों का जीर्णोद्धार हुआ। नमामि गंगे योजना के तहत गंगा सहित अन्य नदियों को निर्मल किया गया। चंद्रयान द्वारा गगन-यान की यात्राओं से विश्व में भारत का मस्तक ऊँचा हुआ। प्रवासी भारतीयों को दोहरी नागरिकता दी गई। भारत के विकास में उनके मत्वपूर्ण योगदान को समझा गया। दलित परिवार से आने वाले रामनाथ कोविंद और आदिवासी महिला द्वौपदी मुर्म को सर्वोच्च संवैधानिक पद राष्ट्रपति के पद पर बैठाया गया।

महात्मा गाँधी के बाद नरेंद्र मोदी पहले व्यक्ति हुए जिन्होंने स्वच्छता को जनांदोलन बना दिया। यही कारण है कि अयोध्या में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले उन्होंने मंदिरों के सफाई का जो जन आह्वान किया लोगों ने सर-आंखों पर लिया। पूरी दुनिया को आश्र्य से भर दिया। सेवा और समर्पण का ऐसा उदाहरण इतिहास में दूसरा नहीं। दीपावली के अवसर पर सरहद पर तैनात जवानों के बीच जाना और उनके साथ खुशियाँ मनाना यह दुनिया में मिसाल है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर साल सरहद के अलग-अलग हिस्से में पहुँचकर जवानों के बीच उनका मनोबल बढ़ाते हैं। सैन्य ताकत को बढ़ावा देते हैं। सेना को अत्याधुनिक सुविधाएँ और साजो-सामान मुहैया कराई जाती हैं। वन रैंक वन पेंशन हो, अग्रिवीर योजना हो, सीमांत गाँवों का विकास हो, देश की रक्षा शक्ति को मजबूत करने और माँ भारती की सेवा में लगे जवानों के मान-सम्मान की बात हो, उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। देश की सुरक्षा के मामले में कोई समझौता नहीं। पुलवामा में हुए आतंकी हमले के १३ वें दिन बालाकोट एयरस्ट्राइक द्वारा आतंकवादियों की तेरहवीं कर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान ही नहीं दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया कि यदि जरूरत पड़ी तो घर में घुसकर मारेंगे। आतंकवाद और भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निर्भीकता कठोरता के प्रतीक तो हैं ही साथ-साथ संवेदनशीलता आत्मीयता और उदारता के भी प्रतीक हैं। जहाँ कठोरता की जरूरत है कठोरता से काम लेते हैं जहाँ संवेदनशीलता की जरूरत है संवेदनशीलता से काम लेते हैं। कोरोना के दौरान जिस प्रकार उन्होंने देश को भी सँभाला और दुनिया की भी चिंता की, यह इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने विश्व का जिस प्रकार नेतृत्व किया है, आज वैश्विक संकट के दौर में दुनिया उनकी तरफ देख रही है। उनके नेतृत्व क्षमता पर पूरी दुनिया का विश्वास है और यह भारत के लिए भारत वासियों के लिए गौरव की बात है। मुस्लिम देश यूएई में मंदिर का निर्माण हो या फिर दुनिया के अनेकों देशों जिनमें कई मुस्लिम देश शामिल हैं द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया जाना उनके करिश्माई व्यक्तित्व और वैश्विक नेतृत्व की स्वीकार्यता का प्रमाण है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री उन्हें बौस कहते हैं तो अमेरिका के राष्ट्रपति विश्व मंचों पर उनसे मिलने के लिए बेताब रहते हैं। जी२० का जिस प्रकार अभूतपूर्व रूप से भारत ने नेतृत्व किया आज अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अमेरिका इंग्लैंड और फ्रांस की नहीं भारत की चर्चा होती है। पूरी दुनिया भारत में वैश्विक भविष्य देख रहा है। नरेंद्र मोदी देशवासियों से ठीक ही कहते हैं – “यही समय है सही समय है।”

न रुकना न थकना और दीनदयाल जी के कहे वाक्य चरैवेति-चरैवेति की दिशा में निरंतर बढ़ते रहना, साथियों को भी उसी दिशा में ले जाने की सतत कोशिश करना, यह भारत की राजनीति में असामान्य घटना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २०१४ में १५ अगस्त को लाल किले के प्राचीर से कहा था, “मैं भारत का प्रधानमंत्री नहीं आपका प्रधान सेवक हूँ”, सच में नरेंद्र मोदी ने अपने को प्रधान सेवक के रूप में स्थापित किया। यह अप्रतिम है कि अपनी १०० वर्षीय माँ को कंधा देने और अंत्येष्टि करने के बाद भी विराम नहीं किया और उसी समय गुजरात के राजभवन पहुँच राज-काज में लग गए। यह अदम्य साहस अपरमित तेज और दूरदृष्टि सामान्य व्यक्ति के पास नहीं होती, कहीं न कहीं ऐसे व्यक्ति पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है।

दो चरणों के चुनाव हो चुके हैं। पहले चरण में १०२ सीटें और दूसरे में ८८ मतलब कुल १९० सीटों पर चुनाव हो चुके हैं। अभी पाँच चरण बाकी हैं। लेकिन दो चरणों में सामान्य से सामान्य लोगों ने विपक्ष का हाल बेहाल देखा। पहली बार विपक्ष नेतृत्व विहीन नीति विहीन और नियत विहीन दिखाई दे रहा वहीं भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए सौभाग्य का विषय है कि उसे भारत स्तरीय ही नहीं विश्व स्तरीय नेतृत्व के रूप में नरेंद्र मोदी मिले हैं। १४ अप्रैल को भारतीय जनता पार्टी ने जो संकल्प पत्र देश के समक्ष रखा है, भारत के सुनहरे भविष्य की संकल्पना की गई है, इसमें २०४७ तक विकसित भारत के निर्माण की दृष्टि है, वहीं कांग्रेस के घोषणा पत्र से साफ जाहिर होता है कि उनके वादे और इरादे ऐसे हैं जो स्पष्ट संकेत दे रहे हैं कि न सत्ता में आएँगे और न वादा करने जैसी कोई स्थिति आएगी।

जिस काँग्रेस ने देश में आपातकाल लगाया, फिर से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने और नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर संविधान को समाप्त करने की बात कर रही है; परिवारवाद और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर देश को खोखला बनाने वाले और सामाजिक न्याय के नाम पर देश की जनता के साथ अन्याय करने वाले विपक्ष व इंडिया गठबंधन के लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भ्रष्टाचार और आरक्षण खत्म करने का आरोप लगाकर देश की जनता को गुमराह नहीं कर सकते। नरेंद्र मोदी ने राजनीतिक पार्टी और नेताओं पर लोगों के खोए हुए विश्वास की वापसी की है। राजनीति के प्रति लोगों के कुविचार को सुविचार में बदला है। नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय देश के जनमानस ने बहुत पहले ले लिया था।



अनुवाद से सम्बाद

एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।

डॉ. सन्तोष खन्ना

(वल्र्ड रिकॉर्ड होल्डर वल्र्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित)

अनुवाद चाहे कविता का हो या कथा साहित्य का अथवा ज्ञानात्मक एवं सूचना साहित्य का, वह अनुवादक से कई अतिरिक्त अपेक्षाओं की माँग करता है। अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में निष्णात होने के साथ- साथ भाषाओं की प्रकृति, प्रविधि, व्याकरण, संस्कृति, शैली और उसके मुहावरे में पारंगत होना होता है। ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में विषयगत् ज्ञान की अपेक्षा के साथ-साथ उसे विषयगत् पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी भी होना आवश्यक होता है।

काव्य और कथा साहित्य के अनुवाद में अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसमें सृजनात्मक प्रतिभा भी हो विशेषकर काव्यानुवाद में सृजनात्मक प्रतिभा के बिना तो काव्य के सही अनुवाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कवि जब कविता की रचना करता है तो वह कविता में मौलिकता, कल्पना, स्वस्थ वैचारिकी, काव्यात्मकता, काव्य वैचित्र्य, संगीत, लय और शैली एवं वैद्यनाथा के सम्मिलन से एक अद्भुत, अनुपम और अद्वितीय रचना करता है। जब ऐसी कविता का अनुवादक अनुवाद करता है तो उसे मूल रचनाकार की भांति लक्ष्य भाषा में अनूदित रचना में उन सभी विशेषताओं को अंतरित करना होता है। अतः स्पष्ट है कि अनुवादक को इस सब विशेषताओं को एक भाषा के धरातल पर नहीं, अपितु दो भाषाओं के धरातल पर यह करिश्मा कर दिखाना होता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक का कार्य सरल और सुगम नहीं होता, उससे मूल रचनाकार से भी अधिक त्याग और तपस्या की अपेक्षा की जाती है। काव्यानुवाद करते समय अनुवाद प्रक्रिया के बारे में मुझे उर्दू के दिल अज़ीज़ और अमर शायर मिर्ज़ा ग़ालिब की एक ग़ज़ल की पंक्तियाँ याद आ गईं। उस की एक पंक्ति है - 'एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।'

इससे पहले की पंक्ति है

'यह इश्क नहीं आसा॑ बस इतना समझ लीजिए, एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।' शायर इन पंक्तियों में प्रेम की व्यंजना करता हुआ उसकी सम्भावनाओं पर प्रकाश डाल रहा है और कहता है कि प्रेम करना आसान नहीं है वह उतना ही कठिन है जितना पानी का दरिया नहीं, बल्कि आग के दरिया में डूब कर उसे पार करना होता है। यह प्रेम महबूबा के प्रति भी हो सकता है अथवा महबूब खुदा के प्रति भी हो सकता है। इन पंक्तियों का अँग्रेज़ी में अनुवाद करना चाहे तो कह सकते हैं 'The path of love is not at all easy, it may be comprehended that one has to immerse oneself in flames of fire to cross it.'

यद्यपि यह अमर पंक्तियाँ प्रेम की कठिनाइयों का वर्णन करती हैं क्योंकि प्रेम अपने सच्चे अर्थों में सम्पूर्ण समर्पण, त्याग तपस्या की अपेक्षा करता है। इसी प्रकार अनुवादक जब अनुवाद करता है तो उसे भी इसी प्रकार की कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। कबीर ने भी कुछ इस तरह की बात कही है :

'कबीरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं, सिर उतारें भूई धरत, फिर पेसे घर माहिं।'

क्या आप इसका अँग्रेज़ी में अनुवाद कर सकते हैं?

अर्थात् कबीर कहते हैं कि यह प्रेम का घर है किसी मामी मौसी का नहीं, वहाँ इसके अंदर वही पैर रख सकता है जो सिर उतार कर भूमि पर रख देता है अर्थात् अपने अहंकार को छोड़कर सम्पूर्ण समर्पण कर देता है, तभी वह सच्चा प्रेम कर सकता है।

This is the abode of love, not of your any aunty

You can enter this abode only

after relinquishing your head of ego.

अँग्रेजी के अनुवाद में न तो मूल का गहरा भाव आ पाया है और न ही काव्य तत्त्व ही, छंद व्यवस्था की तो बात करना ही व्यर्थ है।

एकाएक कोई द्वार खोल कर मेरे सामने आ खड़ा होता है और बिन बुलाए मेहमान की तरह फट-सा पड़ता है, 'मेरी अब भी यही स्थापना है कि काव्यानुवाद असम्भव है। एक पश्चिमी विचारक ने कहा भी था, Translation is impossible."

'अरे! अरे! क्या कह रहे हो? तुम..'

उसने मेरे टोकने पर भी ध्यान न देते हुए कहना जारी रखा - 'इस अनुवाद में अनुवाद की वह परिभाषा पूरी तरह चरितार्थ हो रही है जिसमें कहा गया है कि 'काव्यानुवाद से जो पाठ हमें प्राप्त है वह वैसे ही कुरुप हो जाता है जैसे किसी सुंदर कालीन का उल्था हिस्सा।'

'अरे! अरे! तुम हो कौन? हम अच्छे भले एक गम्भीर विषय पर चिंतन-मनन कर रहे थे। तुमने यहाँ आ कर अनाधिकार व्यवधान डालने की चेष्टा की है। पहले बताओं, तुम हो कौन?' मेरे लहजे में नाराज़गी साफ-साफ झलक रही थी।

'अरे, मैम, आपने पहचाना नहीं, मैं तो आपका अपना हूँ, आपका मानस पुत्र। मैम, मैं...मैं ससीम हूँ।

'ससीम! कौन ससीम? मैंने अब उसे आश्र्वय और ध्यान से देखने का प्रयास किया।

"मैं आपके नाटक 'सेतु के आर पार' के पृष्ठों से सीधा उठ कर चला आ रहा हूँ। यमराज की अदालत में मैंने स्वयं को एक साक्षी के रूप में प्रस्तुत किया था। मैंने अपने साक्ष्य में कहा था कि काव्य का सहज, सटीक और सरस अनुवाद असम्भव है। आपको पता है कि एक और पश्चिमी विचारक ने भी कहा था, 'Thoughts can be translated not the poetry.' 'विचारों का अनुवाद हो सकता है काव्य का नहीं।'

ओह ! हाँ! ससीम तुम हो? अरे, अब पहचाना! तुम तो उस नाटक की अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी हो। हर बात के दो पक्ष होते हैं एक पक्ष और दूसरा विपक्ष। तुम्हारे बिना तो नाटक अधूरा रह जाता। आज कह सकती हूँ नीरस भी हो जाता। किसी भी विषय में विपक्ष के तर्कों से पक्ष का पक्ष और अधिक स्पष्ट और मजबूत होता है बस, शर्त यही है कि विषय के विपक्ष में जो तर्क दिए जायें वह सार्थक, सटीक और सही परिपेक्ष्य में हों।'

'जी, सत्यवचन!' ससीम ने मेरे समक्ष झुकते हुए टिप्पणी की।

'अनुवाद के सम्बन्ध में जो फैसला चित्रगुप्त महाराज ने दिया था, उन्होंने आपके तर्कों को भी ध्यान से सुना था ससीम।'

'जी मैडम, आपका नाटक अनुवाद विषय पर एक अनुपम कृति है। एक मील का पत्थर है। अनुवाद विषय को कथ्य बना कर ऐसा नाटक न पहले कभी लिखा गया और भविष्य में ऐसा कुछ लिखा जायेगा। यह बात मैंने आपको खुश करने के लिए नहीं कही, जिन विद्वानों ने इस नाटक की समीक्षा की है उनका यह कहना है। फिर अनुवादविद्, भाषाविद् और साहित्यकार डा. पूरन चंद टंडन सर ने तो इस नाटक की समीक्षा करते हुए लिखा है यह नाटक अनुवाद का चार्टर है।'

'चलो, वह तो ठीक है और भी विद्वानों ने नाटक को असाधारण नाटक की संज्ञा दी है। वैसे भी डॉ. गार्गी गुप्ता के संसर्ग और सान्निध्य में मैंने अनुवाद को अपना अनन्य साथी बना लिया था। उसी के साथ उठना-बैठना, खाना-पीना, ओड़ना और उसे ही बिछौना बना लिया था। मेरी हर साँस में अनुवाद का अनहृद नाद निरंतर बजता रहता था अर्थात् मेरा जीवन अनुवादमय हो गया था। मुझे लगा, उस समय मेरे समक्ष डॉ. गार्गी गुप्ता जी साकार हो गई हैं और मैं उन्हें सामने पा कर विचारों की रो में बह निकली।'

'आदरणीय डॉ. गार्गी गुप्ता जी के बारे में बहुत सुना है।' ससीम मुझे विस्फारित नेत्रों से देख कर कह रहा था।

'आज आपके यहाँ आने का उद्देश्य क्या?' क्या आज फिर तुम अनुवाद की सम्भावनाओं का विरोध करने आये हो। तुमने अनुवाद के सम्बन्ध में जो उदाहरण दिए हैं वह बहुत पहले के हैं। तुम बाद के अनुवाद शास्त्रियों द्वारा विकसित किए गए सिद्धांत का अध्ययन करो, तुम नायड़ा और न्यूमार्क जैसे विद्वानों का अनुवाद के बारे में समतुल्यता के सिद्धांत को पढ़ो और समझो। इसी तरह इन विद्वानों ने अनुवाद की प्रक्रिया सम्बन्धी सिद्धांतों का विश्लेषण किया है। अगर पाठ का विषयगत् और भाषागत् विश्लेषण करेंगे तो काफी सीमा तक अनुवाद की चुनौतियाँ सहज होती जायेंगी। अगर इन सिद्धांतों को समझ जाओगे तो विरोध के लिए विरोध करना छोड़ दोगे। मेरी राय है विरोध के लिए विरोध कभी सुखकर नहीं होता। एक बात और, आज देश में एक तो विपक्ष कमजोर है और जो है वह बस विरोध के लिए विरोध करता है इससे उसका गौरव और गरिमा तो नहीं बढ़ती बल्कि उल्टा वह अपना पक्ष ही कमजोर करता है और देश की छवि भी धूमिल होती है।'

'क्या सेतु के आर पार' नाटक में मैंने कोई फालतू बात कही थी? क्या आपको मेरा साक्ष्य अच्छा लगा था?'

"अरे ससीम, आओ बैठो, बातों में तो हम तुम्हारे कुशल-क्षेम तक भी नहीं पूछ सके। उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।"

'नहीं... नहीं, मुझे बस सदैव आपका आशीर्वाद चाहिए। मैं जब भी किसी पाठ का अटपटा अनुवाद देखता हूँ तो अनुवाद की असम्भाव्यता पर मेरे विचार सिर उठाने लगते हैं। आपने देखा होगा कई बार लोग छोटे-से वाक्य तक का सही अनुवाद नहीं कर पाते। अक्सर एक वाक्य 'नारे' की तरह इस्तेमाल होता है - 'Say no to liquor.' उसका अनुवाद क्या हुआ, आप को तो ज्ञात होगा, 'कृपया शराब से कुछ न कहिए।' ससीम हँस रहा था और मेरे भी होंठों पर मुस्कान फैल गई। थोड़ा रुक कर मैंने गम्भीर होते हुए कहा, 'हाल में बिहार में ज़हरीली शराब पीने से ७५ व्यक्ति जान गँवा बैठे हैं। वहाँ के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी कह रहे हैं 'शराब को कुछ ना कहिए, उसे दोष मत दीजिए, जो पिएगा मरेगा।' मेरे शब्दों में दर्द भी झलका और व्यंग्य भी।

'वह तो असम्बेदनशीलता की पराकाष्ठा है।'

"मैं मानता हूँ शराबबंदी स्वयं में बहुत अच्छी नीति है किंतु उसे लागू करो तो मुस्तैदी से लागू करो वरना शराबबंदी शराब की खुली बिक्री से भी ख़तरनाक है।" ससीम ने अपना हर शब्द तोलते हुए कहा।

'ससीम, मैं भी इस बात से सहमत हूँ। ढुलमुल रवैये से आप बिहार के ज़हरीली शराब जैसे कांड स्वयं आमंत्रित करते हैं।'

'मैम, मैं आपको एक और बात बताना चाहता हूँ। आजकल अथवा हमेशा ही कुछ लोग हमारे हिंदू धर्म को बदनाम करते रहते हैं उसका एक कारण हमारे वेदों उपनिषदों आदि का विदेशियों द्वारा अँग्रेजी में किया गया गलत अनुवाद है। जैसे कुछ लोग हिंदू धर्म का मज़ाक बनाते हुए कहते हैं कि हिंदुओं के ३३ करोड़ देवी देवता हैं, उनको यह नहीं पता कि यह भ्रांति गलत अनुवाद के कारण है। संस्कृत के एक शब्द 'कोटि' का गलत अनुवाद करने के कारण यह भ्रांति फैलाई गई है। एक शब्द के कोई एक अर्थ तो होते नहीं। संस्कृत के 'कोटि' शब्द का एक अर्थ करोड़ है तो दूसरा अर्थ श्रेणी भी है। अर्थात् हमारे देवताओं की ३३ कोटियाँ अर्थात् श्रेणियाँ हैं। कहो तो मैं इन श्रेणियों पर प्रकाश डालूँ।

'ससीम, तुम शत-प्रतिशत सही कह रहे हो। हमारे धर्म ग्रंथों का जाने-अनजाने गलत अनुवाद किया गया जिसमें लोगों में कई प्रकार की भ्रांतियाँ फैली हैं। हाँ ससीम, मुझे एक-दो उदाहरण याद आ रहे हैं जहाँ विदेशी विद्वानों ने हमारे धर्म ग्रंथों के अनुवाद में अर्थ का अनर्थ किया है।'

ससीम अपनी बात का अनुमोदन सुनकर उछल पड़ा।

'कृपया आप उहाहरण बताइए ना। अर्थ के अनर्थ वाले उदाहरणों का मैं एक संकलन तैयार कर रहा हूँ।'

'जर्मन भाषा के संस्कृत विद्वान मैक्समूलर ने अपनी अनूदित पुस्तक 'What India teaches us.' में 'हिरण्यगर्भ' शब्द का अर्थ हिरण के गर्भ (fetus of the deer) किया है तथा 'अज' शब्द अजन्मा के स्थान पर बकरा (goat) कर दिया है। हिरण्यगर्भ शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के एक सूक्त में हुआ है जो निम्नवत् है :

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधारं पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ --- सूक्त ऋग्वेद -१०-१२१-१

श्लोक का अर्थ - सब सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का आधार जो-जो जगत हो और होएगा उसका आधार परमात्मा है जो जगत की उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान था जिसने पृथिवी और सूर्य-तारों का सृजन किया, उस देव की प्रेम भक्ति किया करें।

इस श्लोक से हिरण्यगर्भ से ईश्वर का अर्थ लगाया जाता है - जो अव्यक्त ब्रह्म है और अनुवाद में हिरण आदि कहा गया है।

'हे ईश्वर! हम इन श्लोकों को हवन के समय बोलते हैं। मैम, मैं आज प्रसिद्ध लेखिका गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के शीर्षक तक के गलत अनुवाद से खिन्न हूँ। इसका अनुवाद किया गया है 'Tomb of Sand'. Tomb शब्द का अर्थ है मकबरा या कब्र जिसमें मुस्लिम या ईसाई धर्म के मृतकों को दफनाया जाता है। समाधि का tomb शब्द से कैसे अर्थ स्पष्ट हो सकता है?'

'गीतांजलि श्री को तो इसी वर्ष इस उपन्यास पर अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है!'

'जी जानता हूँ। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' का अनुवाद देज़ी रॉकवेल ने किया है। उन्हें भी इस उपन्यास के अनुवाद के लिए बुकर पुरस्कार मिला है। 'रेत समाधि' उपन्यास की लेखिका और अनुवादिका दोनों को संयुक्त रूप से यह बुकर पुरस्कार दिया गया है। जब शीर्षक का अनुवाद ही त्रुटिपूर्ण हैं तो सम्पूर्ण उपन्यास की नियति हुई होगी?

तभी एक सुदर्शन युवक वहाँ एकाएक प्रकट हो जाता है मानों काले बादलों के पीछे से सूर्य अवतरित हुआ हो। हम दोनों हत्प्रभ हो उसे बस देखते रह जाते हैं कुछ बोल नहीं पाते हैं। वह आगे बढ़ कर स्वयं अपना परिचय देता है।

'मेरा नाम अनुवाद सम्भव है। मैं एक राष्ट्रवादी हूँ। देश की भिन्न-भिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद सेतु के निर्माण का प्रयास कर रहा हूँ। समूचे भारतीय साहित्य के प्रचार-प्रसार का माध्यम है अनुवाद और अनुवाद से ही राष्ट्रीय एकता सम्भव है। भारत का उदात्त दर्शन और चिंतन का मंत्र है 'वासुदेव कुटुम्बकम्'। हम पूरे विश्व को एक परिवार मानते हैं। वैश्विक एकता भी अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव है।'

वह युवक निरंतर अपने बारे में बताता जा रहा था।

'अनुवाद सम्भव जी, आइए हम आपका हृदय से स्वागत करते हैं और मिलिए इनसे, यह हैं ससीम। अनुवाद को लेकर इनके मानस में हमेशा उथल-पुथल मच्ची रहती है। आपके संसर्ग में रहेगा तो इसके दिमाग के कई जाले साफ होंगे।'

'ससीम भाई, हम मिलकर काम करेंगे। एक-एक दो ग्यारह बन जाते हैं।' अनुवाद सम्भव ने आगे बढ़ कर ससीम से हाथ मिलाया।

'ससीम इस समय गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अनुवाद से खिन्न है। इन्हें 'समाधि' का अनुवाद Tomb बिल्कुल नहीं भाया।' मैंने ससीम का पक्ष अनुवाद सम्भव के समक्ष रखने का प्रयास किया।

'रेत समाधि' शीर्षक का अनुवाद 'Tomb of Sand' सही है, यह समझने के लिए आपको उपन्यास के कथ्य, कलेवर व उसके तेवर और उसके मर्म को समझना होगा। केवल पाठक की दृष्टि से पढ़कर उपन्यास के मर्म को शायद नहीं समझा जा सकता। अनुवाद के लिए उसे अनुवादक की दृष्टि से समझना होगा।' अनुवाद सम्भव ससीम को समझाने का प्रयास कर रहा था।



'भाई, मैंने पढ़ा है उसे। मैं मानता हूँ गीतांजलि श्री का यह उपन्यास एक अलग किस्म का बहुआयामी उपन्यास है पर 'रेत समाधि' शीर्षक का अनुवाद, 'Tomb of Sand' सही नहीं लगा। समाधि शब्द भारतीय संस्कृति और आध्यात्म से सम्बन्धित शब्दों में से एक है।' ससीम ने उत्सुकता से अपना पक्ष रखा।

'आपको क्या लगता है कि इस उपन्यास की अनुवादिका अमरीका की डेज़ी रॉकवेल समाधि का अर्थ नहीं समझती थीं। उसने स्वयं अपने प्रारम्भिक पृष्ठों पर 'समाधि' शब्द का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि समाधि का एक अर्थ है ध्यान में उतर जाना और दूसरा अर्थ है किसी महापुरुष की समाधि।' अनुवाद सम्भव ने ससीम को समझाने का प्रयास किया।

'भगवान रामचंद्र जी ने भी सरयू नदी में जल समाधि ली थी।' ससीम ने अपनी ओर से जोड़ा।

'अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है। शब्द कई प्रकार से लक्षणार्थ रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। देखना यह है कि उपन्यासकार ने इस शब्द का किस अर्थ में प्रयोग किया है। रेत समाधि' उपन्यास भारत के विभाजन की त्रासदी पर आधारित है। इसमें अन्य कथाओं के साथ, पाकिस्तान से ट्रक भर-भर हिंदू लड़कियों के थार मरुस्थल में दफन होने की दास्तान का सजीव चित्रण है। हिंदू लड़कियों की थार मरुस्थल की रेत के बवंडर में नाक, कान, आँख और पूरे शरीर में रेत भर जाने से मौत के कारण उनकी मृत देह रेत में ही दफन हो गई, इस संदर्भ में उनके दफन होने की बात कही गई है। अतः उनके मकबरे के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है उसी को उपन्यास लेखिका ने रेत समाधि' कहा है। लड़कियाँ समाधि स्वयं नहीं लेतीं, उनकी लाशें रेत के तूफान में दफन हो जाती हैं, इस अर्थ में 'Tomb' शब्द का सही प्रयोग है।'

'अनुवाद सम्भव जी, मुझे रेत समाधि' उपन्यास पढ़ने का सुअवसर नहीं मिला, इसलिए मैं यहाँ कोई टिप्पणी नहीं करूँगी। इतना जरूर कहूँगी कि गीतांजलि श्री को बुकर पुरस्कार मिलना एक ऐतिहासिक परिघटना है। वह पहली भारतीय लेखिका हैं या कि भारतीय साहित्य की पहली लेखिका हैं जिसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। रवींद्र नाथ टैगोर को वर्ष १९१३ में नोबल पुरस्कार मिला था और वह भी अँग्रेजी अनुवाद के माध्यम से मिला था। यद्यपि वह अनुवाद रवींद्र नाथ टैगोर ने स्वयं किया था और 'गीतांजलि' पर मिले नोबल पुरस्कार के लगभग १० वर्षों बाद गीतांजलि श्री को यह अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है।'

'आप इस बात से सहमत होंगे कि इस पुरस्कार का श्रेय अनुवाद को जाता है। मुझे विश्वास है ससीम भाई को इसे स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होगी।' अनुवाद सम्भव ने ससीम की ओर देखते और मृदु मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

'भाई, मैं काव्यानुवाद की असम्भाव्यता की बात कहता रहता हूँ किंतु अब मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि रेत समाधि' उपन्यास में जिस प्रकार की विपुल भाषा विविधता का लेखिका ने प्रयोग किया है, उसका अनुवाद बहुत कठिन रहा होगा।' ससीम ने अपना दृष्टिकोण रखने का प्रयत्न किया।

'शायद आप न जानते हों, डेज़ी रॉकवेल हिंदी की एक अनुभवी अनुवादिका हैं। इससे पहले उन्होंने हिंदी और उर्दू साहित्य की कई क्लासिक कृतियों का अनुवाद किया है, जिनमें उपेंद्रनाथ अश्क की 'गिरती दीवारें', भीष्म साहनी की 'तमस' और खदीजा मस्तूर की 'द वूमेंस कोर्टयार्ड' शामिल हैं। उन्होंने अपनी पीएचडी भी दक्षिण एशियाई साहित्य में की है।'

'अच्छा, मैं इस बात से अनभिज्ञ था।'

ससीम जी, आप जानते हैं कि गीतांजलि श्री के उपन्यास रेत समाधि' को पढ़ना आसान नहीं है। इसमें भारतीय साहित्य की समृद्ध परम्परा और संस्कृति का प्रतिपादन किया गया है और वह केवल हिंदी भाषा में ही नहीं लिखा गया, अपितु उसकी बोलियों में जो अपने तेवरों में यहाँ मौजूद हैं, का इस कृति में खुल कर प्रयोग किया गया है शायद ही किसी और हिंदी लेखक ने भाषा का इस प्रकार खुला इस्तेमाल किया हो। ऐसी कृति का अनुवाद तो वस्तुतः, 'आग का दरिया है और दूब के जाना है' को चरितार्थ करता है। डेज़ी रॉकवेल ने विदेशी होते हुए भी इस चुनौती को स्वीकार किया और अनुवाद किया।'

बेशक! जब से गीतांजलि श्री और डेजी रॉकवेल को अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिला है, हिंदी लेखक डेजी रॉकवेल जैसे अनुवादक खोज रहे हैं कि कोई उनके उपन्यास या किसी रचना का अँग्रेजी में अनुवाद कर दे तो हो सकता है उनको भी अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिल जाए। बुकर पुरस्कार के साथ पुरस्कार की एक भारी धनराशि मिलती है।

जी, लेखिका और अनुवादिका, दोनों को २४-२४ लाख रुपए मिले हैं। अब तो भारत में पिछले वर्षों में साहित्य पर बड़ी-बड़ी धनराशि वाले पुरस्कार प्रारंभ किये गये हैं। यह पुरस्कार भारतीय साहित्य पर प्रदान किये जाते हैं। वर्ष २०१८ में इंग्लैंड की बुलडोजर कम्पनी ने JCB Prize for Literature आरम्भ किया था जिसकी पुरस्कार राशि पच्चीस लाख रुपए हैं। अब तक तीन बार मलयालम लेखकों को यह पुरस्कार दिया गया है। पुरस्कार के लिए रचना का अँग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत करना होता है।

'क्या बात है? इस पुरस्कार के बारे में अधिकांश रचनाकारों को पता ही नहीं है।'

'मैं भी पहली बार उसके बारे में सुन रहा हूँ।' ससीम ने आश्वर्यचकित होते हुए कहा।

"इसके अलावा, भारत में ही दिए जाने वाला एक और पुरस्कार है जो कई मानों में लगभग इस इंटरनेशनल बुकर के टक्कर के हैं, भले ही हम में से बहुतों को उनकी जानकारी न हो। इस पुरस्कार का नाम DSC Prize for South Asian Literature है जो २०११ में सुरीना नरुला और उनके पति मनहद नरुला ने शुरू किया था जिनके अनेक प्रकार के व्यवसाय अफ्रीका और इंग्लैंड में हैं। इसकी राशि शुरू में तो ५०,००० डॉलर थी पर फिर आधी कर दिए जाने पर भी २५,००० डॉलर तो है ही। JCB और DSC यह दोनों पुरस्कार मूल अँग्रेजी में लिखी पुस्तकों को भी मिल सकते हैं और भारतीय भाषाओं से अँग्रेजी में अनूदित पुस्तकों को भी जो चाहे भारत में छपी हों चाहे बाहर। बल्कि सिर्फ चार साल से चल रहा JCB पुरस्कार तो तीन साल अनूदित उपन्यासों को ही मिला है और संयोग देखिये कि इन तीनों उपन्यासों की मूल भाषा मलयालम थी। DSC पुरस्कार एम मुकंदन को Delhi: A Silique पर मिला था और वर्ष २०२१ में आई.आई.टी.दिल्ली के कम्यूटर विभाग के प्रोफेसर अमिताभ बागची को 'Half the Night is Gone' पर मिला है परंतु ध्यान रहे यह भारतीय भाषाओं की अँग्रेजी में अनूदित कृतियों पर मिल सकता है।'

"अनुवाद सम्भव जी, आपने हिंदी जगत के साहित्यकारों के लिए बहुत अच्छा समाचार सुनाया है। ससीम, आप भी समझ गये होंगे कि आजकल अनुवाद का कितना महत्व बढ़ गया है। अगर कोई अनुवादक परिश्रम और लगन से किसी अच्छी साहित्यिक कृति का अनुवाद करें तो वह मालामाल हो सकता है।"

"आपने सही कहा, अब भारतीय भाषाओं को अँग्रेजी में अनूदित रचनाओं को अपने देश और विदेश में पुरस्कारों की सम्भावना बहुत बढ़ गई है।" अनुवाद सम्भव ने प्रफुल्लित होते हुए कहा।

'मैं, आप तो बहुत खुश हुई यह जान करा।' ससीम ने कहा।

हाँ, ससीम, मैं बहुत खुश हूँ और इस बात से और अधिक खुश हूँ कि डॉ. गार्गी गुप्ता जी भी इस बात से बहुत बहुत खुश होंगी कि वह अनुवाद विधा को साहित्य की कोटि में लाना चाहती थीं उनका वह मनोरथ पूरा हो रहा है।'

'आदरणीय डॉ. गार्गी गुप्ता के दिखाए रास्ते पर हम हमेशा चलते रहेंगे।'

ससीम, तुम भी अपनी किसी रचना का अनुवाद स्वयं ही कर डालो, कौन जाने, आपको भी कोई बड़ा पुरस्कार मिल जाये।'

'अनुवाद करने के लिए मुझे भी आग का दरिया पार करना होगा। पर मैं तैयार हूँ। मैं अनुवाद पुरस्कार के लिए नहीं, भारतीय भाषाओं में सेतु बनाने के लिए करूँगा। मैं भाई अनुवाद सम्भव के साथ मिल कर काम करूँगा।'

'बहुत खूब। मेरी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।'

ससीम ने झुक कर मेरे प्रति अपना आभार प्रकट किया। उसके मुखमंडल पर आभा उद्धासित हो उठी।

मैं अंडमान हूँ

प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

द्वीपों का द्वीप
 मैं अंडमान हूँ
 भारत के गर्व का
 कला, संस्कृति, पर्व का,
 मैं स्वाभिमान हूँ
 मैं अंडमान हूँ ॥१॥
 मेरे गर्भ में समाया
 साहित्य का स्रोत
 विरासत की कहानी
 सपूत्रों की कथा-व्यथा
 उसकी पीड़ा, यातना
 को ज्ञेलती हुई
 मैं विद्यमान हूँ ।
 मैं अंडमान हूँ ॥२॥
 मेरे इतिहास को खगालने
 आते यहाँ अध्येता
 करते अनुसंधान
 गोष्ठियों का आयोजन
 हूँडते मेरे अंदर भारत की आत्मा, मैं उन्हें बताती हूँ
 अपनी थाती, उस पर लगे ग्रहण-का खतरा
 और त्याग शौर्य बलिदान का वह क्षण
 मैं माँ बंदिनी
 बिसूर रही थी
 इन्हें, तुम्हें और उन्हें
 पाने को मुक्ति का क्षण
 उसी गरल का करती मैं पान हूँ
 मैं अंडमान हूँ ॥३॥
 यह बंदिनी माँ
 चाहती है कहना
 वह सब, जिसके लिए
 पैदा किए हैं लाल ।
 हा! हंत खेद
 आज यह विवश और
 लाचार होकर
 दुश्शासन की सभा में खड़ी

द्रोपदी की तरह पुकार रही
 कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण
 है न कोई न्याय कर्ता
 फिर भी कहते, बुद्धिमान हूँ ।
 मैं अंडमान हूँ ॥४॥
 हमारी ही तो संताने हैं 'जारवा'
 सप्त आदिम जातियों में प्रसिद्ध
 उन्हीं से मेरा मिलना कर दिया निषिद्ध
 ये आज भी, घुमंतु और नग्न हैं
 इनके उनके टुकड़ों पर मग्न हैं ।
 देख इन्हें दुखता है दिल
 समृद्धवान भी कुछ नहीं करता
 इन्हें कब मिलेगा
 रोटी कपड़ा और मकान
 कौन आएगा उद्धार करने
 कौन बनेगा इनका भगवान
 इसीलिए मैं भी परेशान हूँ
 मैं अंडमान हूँ ॥५॥
 मेरा ही द्वीप 'हैवलाक'
 सब द्वीपों से न्यारा है
 असीम सुषमा बिखेरती प्रकृति
 बन गई है सृष्टि की अनुपम कृति
 यही बैठ जलयान किलोमीटर पचास
 पहुँचते हैं लोग
 नील टापू के पास
 दिखता वहीं द्वीप, नायक सा
 भव्यमान मेरा द्वीप 'हैवलाक'
 शांति का टापू है ।
 न वहाँ कचड़ा न कापू है ।
 उसी की गोद में
 रखे शिर सोती हूँ
 और होती वहीं गतिमान हूँ ।
 मैं अंडमान हूँ ॥६॥
 करता मुक्ता बिहार
 बालुका अमल ध्वल तटों पर
 आया युवकों का दल
 हो रहा प्रमुदित
 निहार सागर-गर्भस्थल
 सीपी मोती मछलियों की

अठखेलियाँ करती मन को विह्वल
 फिर तट पर आया दल
 रुका ही था एक पल
 दिखा पड़ाकी सागौनी बनों का
 लहराता द्रुम-दल
 मानों वे मना रहे हैं
 आजादी का जश्न
 यहाँ पूछ रहे हैं प्रश्न
 उनके आने का
 गगनोन्मुख पड़ाकी बनों
 में लटकती बल्लरियों को पकड़
 ठहर गया युवकों का दल
 आयुशेष हो चले वृक्षों से
 करने लगा संवाद
 पूछता इतिहास का प्रश्न
 वृद्ध इतिहास का प्रश्न
 वृद्ध पड़ाकी बल्लरियाँ
 दे रही हैं मौन में
 हाँ, मैं हूँ वही
 पर अब बनी खलिहान हूँ
 मैं अंडमान हूँ ॥७॥
 आया म्यूजियम द्वार
 भव्य भवनों में हैं खड़ी
 दिव्य मानुष आकृतियाँ अपार
 दे रही हैं साक्ष्य
 अपने पूर्वजों के त्याग का
 बलिदान का, मान का, अपमान का
 वहीं आगे ढोल बजाती आकृतियाँ
 दे रही हैं प्रमाण
 अपने पाहन होने का
 मैं भी वहीं विद्यामन हूँ
 मैं अंडमान हूँ ॥८॥
 भारत की महिमा अनंत
 है वहाँ विराजित एक संत
 चिन्मया मिशन के पूत संत
 कीर्ति प्रसरित जिनकी दिंगत ॥९॥
 सुखसागर उनके परम शिष्य
 निर्मल पुनीत तन कीर्तिमान
 जिनकी वाणी में ओज अधिक

सुख देता जो है विद्यमान ॥१०॥
 अतिशय पूजनीय कीर्तिधाम
 जाकर देखा अतुलधाम
 बलिदानी गाथाएँ आसकाम
 जिनसे होती हैं मूर्तिमान ॥११॥
 उन वीरों की आवाजों में
 गूँजता जहाँ है एक रोर
 बेरी जेलर के हंटर से
 वीरों का हो रहा शोर ॥१२॥
 जाकर देखा शंपाप्रदर्श
 हृदय विदारक उत्पन्न मर्ष
 हुतात्मओं की आहों से
 मन विचलित कर लिया कर्ष ॥१३॥
 जननी को मुक्ति दिलाने को
 बलिदानी जहाँ हुए निरुद्ध
 सेल्युलर जेल वही कहलाता
 देख जिसे मैं हुआ कुद्ध ॥१४॥
 सेल्युलर जेल यमपुरी सदृश
 सप्त अवलियों में रेखांकित
 जो निरुद्ध इसमें हो जाता
 मृत्यु बाद ही बाहर आता ॥१५॥
 इसी जेल में बंद हुए थे
 सावरकर से वीर महान
 किर भी जिंदा होकर निकले
 था उनको अपना देशभिमान ॥१६॥
 सन् अठारह सौ अट्टावन
 मार्च बीस को पहली बार
 दो सौ बलिदानी पूतों को
 बना कैदी दिया उतार ॥१७॥
 ऐसी ही काल कोठरी में
 सावरकर भी तो बंद हुए
 वहीं कील से लिख करके
 क्रांति ज्वाल के छंद दिए ।
 ऐसे ही कितने वीरों ने
 भोगा उस काला पानी को
 यातना सही पर आह नहीं
 जेलर बेरी के मानमानी को ।
 होते अत्याचार बहुत
 संकट में प्राणों का लाला था ।

करवाते घनधोर परिश्रम
 डेविड बेरी से पाला था ॥१८॥
 कोल्हू में समा गई उनकी
 तरुणाइ की सारी उमंग
 पर झुके नहीं सारे कैदी
 आखिर जीती राष्ट्र जंग ॥१९॥
 श्री वीर विनायक दामोदर
 सावरकर अग्रज सहित बंद
 एक दूसरे से न मिल सके
 था ऐसा प्रहरी जयचंद ॥२०॥
 पंद्रह मील की दूरी पर
 एक हॉफ्रीगंज ठिकाना था
 चौवालिस सेनानी भूँज दिए ।
 हैवानियत का ऐसा जमाना था ॥२१॥
 इन वीरों के श्रम सीकर से
 रास द्वीप की दिव्य छटा
 ऐसी लगती है आज हमें
 जैसी पूनों की चंद छटा ॥२२॥
 फिरंगियों का मुख्यालय
 यही मनोरम धाम था ।
 जीर्ण शीर्ण भवनों का समूह
 और मंदिर द्वय अभिराम था ॥२३॥
 इन भवनों पर आज चतुर्दिग
 लतिकाएँ इठलाती हैं ।
 खरगोशों और काक मयूरों
 की आबाजें आती हैं ॥२४॥
 असीम सिंधु के गर्जन से
 नैसर्गिक सुषमा दिखती अपार
 निर्निमेष मैं देख रहा
 लगता था जैसे स्वर्ग द्वार ॥२५॥



राजनीति और साहित्य

प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

(अतिथि सम्पादक "व्यंजना")

'राजनीति' शब्द राजा और नीति इन दो शब्दों से मिलकर बना हुआ एक समस्त पद है राजा का अर्थ है - राज्यव्यवस्था, चाहे वह लोकतंत्र हो या राजतंत्र नीति का अर्थ है - नमन करने या नेतृत्व करने की प्रणाली इसी से नैतिकता शब्द बना है वस्तुतः नैतिक व्यवस्था द्वारा संचालित राज्य की गति-मति को राजनीति कहते हैं प्राचीन काल में हमारे देश में राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था राजा पृथु ने पूरी पृथ्वी को मात्स्य न्याय यानी अराजकता से मुक्त करके सुशासन स्थापित किया था और प्रजावत्सलता का आदर्श रखा था प्राचीन राज्य व्यवस्था में सर्वश्रेष्ठ, सर्व शक्तिमान प्रजापालक शासक का चयन इसीलिए राजपद पर किया जाता था महाभारत में यह व्यवस्था दी गयी है, "राजेषु राष्ट्रेषु धर्मो नवावतिष्ठते" आदर्श राज्य में प्रशासन के हित में कभी-कभी कूटनीति का उपयोग करना पड़ता है, जिससे कूटनीति भी रचनात्मक राजनीति का एक अंग बन गयी। चाणक्य के अर्थशास्त्र में कौटिल्य नीति के अंतर्गत सुशासन के लिए विधि विहित 'दण्ड नीति' का विधान किया गया है "दण्डनीतिरेका विद्येत्योसल स प्रतिष्ठा" कालांतर में जब कल्याण राज्य की अवधारणा आई तब राजनीति का अर्थ कामदंक नीति के अनुसार हो गया "धर्मार्थ फलाय राज्याय" भारतीय संस्कृति के अतिरिक्त अरस्तू, प्लेटो ने भी राजतंत्र की अनिवार्यता बतायी है कालांतर में भारतीय शास्त्रों में राजतन्त्र को शासित करने के लिए धर्मतंत्र की स्थापना की गयी और यह विधान किया गया है - "विप्रस्य किंकरो भूपो" अर्थात् विप्र यानी बुद्धिजीवियों की सेवा सहायता करना राजा का कर्तव्य है, क्योंकि वे समाज के लिए सर्वाधिक उपयोगी हैं प्राचीन भारत में इसीलिए पुरोहित, आमात्य या धर्माध्यक्ष का पद राजा से बड़ा होता था शासक उनके बुद्धिवल और अपने बाहुबल के सहयोग से राजकाज करता था इसी व्यवस्था का दूसरा नाम है - रामराज्य वह भले ही फेंटेसी हो, किन्तु आदर्श तो था ही।

कालांतर में जिसके पास शक्ति थी, उसने विद्या, बुद्धि, कला, वाणिज्य-व्यापार, वित्त व्यवस्था आदि सबको अपने नियंत्रण में ले लिया इससे स्वेच्छाचार को बड़ावा मिला उससे हतप्रभ होकर कुछ बुद्धिजीवी "दिल्लीश्वरोवा या जगदीश्वरोवा" कहते हुए उनके प्रशस्ति वाचन में जुट गये, कुछ विद्रोही बन गये और कुछ कुंठित होकर उदासीन बने रहे। कूर शासकों ने अपने चाटुकारों को भाँति-भाँति के राजकीय सम्मान प्रदान करके उन्हें "चारण" बनने को विवश किया और विद्रोहियों का दमन करते हुए फासिस्टी व्यवस्था स्थापित की। उदासीन वर्ग सबसे उपेक्षित होकर भीतर-भीतर भुनभुनाता रहा, पलायनोन्मुख बना रहा और सत्साहित्य का राजनीति से कोई सम्बंध नहीं है, ऐसी प्रवंचनापूर्ण क्षद्ध घोषणायें करता हुआ अपना गम गलत करता रहा। इतिहास साक्षी है कि प्राचीनकाल में अनेक साहित्यकार अपने आश्रयदाता के साथ निष्ठापूर्वक जुड़े रहे। महाकवि चंद्रवरदायी राजकवि होने के साथ-साथ पृथ्वीराज राठौर के सखा, सचिव और सेनानी भी थे। विद्यापति मिथिला नरेश, राजा शिवसिंह के परम सहायक और सलाहकार थे उन्होंने स्वयं को राजा का "खेलन कवि" यानी लँगोटिया यार कहा है। अपने आश्रयदाता को उन्होंने कई बार संकटों से उबारा। अकबरी दरबार के नौ-रक्तों में गण्यमान नरहरि महापात्र ने अकबर को समझाकर गो-हत्या बंद करायी थी। कविवर भूषण अपनी ओजस्वी रचनाओं द्वारा महाराज शिवाजी और छत्रसाल का हौसला बड़ाते रहे हैं। आचार्य केशवदास ओरछा



नरेश इंद्र सिंह के राजगुरु थे। उन्होंने राजनय नीति अध्यात्म विषयक रचनाएँ करके समय-समय पर राजा को प्रबोध दिया। बूँदी नरेश के राजकवि सूर्यमल मिश्रण को दानाध्यक्ष का पद प्राप्त था। वे जिसको जितना अनुदान संस्तुत कर देते थे, वह राजकोष से चुकाया जाता था। वंश भास्कर में बूँदी राज्य का इतिहास लिखते हुए उन्होंने यह शर्त रखी कि राजा का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। इसी प्रकार रहीम, वृन्द आदि कई रचनाकार राजनीति और साहित्य के सेतु बने रहे। वस्तुतः पहले कवियों को राज्य का गौरव प्रतीक माना जाता था। कवि प्राणनाथ ने एक प्रसंग में लिखा है "प्राणनाथ सरस सभा न सोहै कवि बिन विद्या बिन बाद, न नगर बिनु नद को" इन गुण ग्राहक शासकों के कारण दरबार से जुड़ना कवि कर्म का गौरव माना जाता रहा है, साथ ही सफलता का प्रतिमान भी। रीति कवि ठाकुर ने लिखा - "ठाकुर सो कवि भावति मोहिं, जो राजसभा में बड़प्पन पावे"। उन दिनों कवि का स्तर राजा से कमतर नहीं था। कवि पद्माकर ने लिखा था - "आप जगदीश्वर हैं जग में विराजमान, हमहूँ कवीश्वर हवै राजति रहत हैं।"

दरबार से सम्बद्ध कवि समाज में भी समादृत होते रहते थे। कवि मतिराम बड़े गर्व से कहते हैं कि हम राजसभा के श्रृंगार हैं वे तर्क देते हैं - विक्रम और भोज की गौरव वृद्धि महाकवि कालीदास के द्वारा हुयी है। उत्तर मध्य काल में काव्य कला मर्मज्ञ, सहृदय रसज्ञ सामंतों का अभाव हो गया वे विलास-वृत्ति के शिकार हो गये, उन्होंने न कवियों का निर्देश माना और न उनको सम्मान जनक राज्याश्रय दिया। अधिकतर राजा हमलावर थे विजातीय, विभाषीय और वेधरम हो गये थे। उनसे क्षुब्ध होकर कवियों ने राज्याश्रय त्याग दिया। गोस्वामी तुलसीदास ने बहुत पहले लिखा था कि प्राकृत जन का गुणगान करना पाप है। किसी से याचना करना लज्जा का विषय है। गोस्वामी तुलसीदास, कवीरदास आदि अनेक भक्त, संत कवियों ने राज्याश्रय और राजनीति को जी भर कोसा। उन्होंने अपना एक "मनोराज्य" बना लिया, केवल राम दरबार से जुड़े रहे और यहीं प्रबोध देते रहे - "राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा" या "चाहिय धरमशील नरनाहू" स्वामी जी कहते हैं - जो राजा नीति नहीं जानता, जो "प्रजाशन" हो गया है, जो "भूमिचोर" है और जो निरुद्देश्य (बेकाज) राजकाज कर रहा है, वह त्याज्य है। इन महाकवियों का ऐसा प्रभाव जनजीवन पर पड़ा कि सत्ता और राजनीति से जुड़ना गर्व की जगह ग्लानि का विषय हो गया।

आधुनिक काल में बहुत दिनों तक साहित्य समाज अँग्रेजों के मायावी शासन से सम्मोहित रहा जब उनके अत्याचारों का खुलासा हुआ तब साहित्यकारों और पत्रकारों ने स्वतंत्रता प्राप्ति होने तक विलायती व्यवस्था की जमकर भर्त्सना की। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले साहित्यकार माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण, सियारामशरण गुप्त, दिनकर, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि ने अँग्रेजों की राजनीति का भरसक मुकाबला किया। यदि राजनीति को अद्भूत मानकर ये तटस्थ हो जाते तो जनता जनार्दन को संघर्ष के लिए कौन प्रेरित करता! आजादी मिलने के बाद नवीन जी, दिनकर जी, चुनाव लड़कर संसद में पहुँचे। मैथिलीशरण जी राज्य सभा के सदस्य रहे। श्यामलाल "पार्षद" जी ने प्रसिद्ध झण्डा गीत लिखा। इस सबने राष्ट्रीय संस्कृति की अलख जगायी। यद्यपि किसी साहित्यकार को कैबिनेट में नहीं लिया गया, फिर भी ये कुंठित नहीं हुए।

यह सहज स्वीकार्य है कि राष्ट्रीय जीवन में सामाजिक संचेतना, अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान, सबकी आवश्यकता पड़ती है। भारत ने जिस लोकतंत्र का निर्माण किया उसमें जहाँ कई व्यवस्थागत अधिकार दिये गये हैं, वहीं हर नागरिक के संविधान सम्मत कर्तव्य कर्म भी निर्धारित किये गये हैं। ऐसी स्थिति में शुतुर्मुगी वृत्ति धारण करके राजनीति निरपेक्ष हो जाना एक प्रकार से आत्मघात होगा। दूसरी ओर राजनीति विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रजातांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करना प्रबुद्ध वर्ग का राष्ट्रधर्म कहा जायेगा।

साहित्य राजनीति का यह अंतर्द्वंद्व मूलतः प्रगतिवादियों की देन है। मार्क्सवाद चूँकि व्यक्ति स्वातंत्र्य का विरोधी है, लेनिन चूँकि "स्टेटलेस सोसाइटी" के पक्षधर रहे हैं, इसलिए इनके साहित्य में दलीय राजनीति इतनी अधिक मात्रा में भर गयी कि जन साधारण में इस पालिमिक्स के प्रति विवृष्णा का भाव भर गया। इन्होंने राष्ट्रीय संस्कृति, इतिहास, अध्यात्म और परम्परा का विरोध करके सिर्फ मजदूर क्रांति को अपना ध्येय बनाया। बहुत दिन सत्ता का स्वाद चखा और सत्ता परिवर्तन के कारण उपेक्षा का जो दंश सहा, उससे राजनीति से दूरी स्थापित करने का वाक़-छल किया। आपात काल तक ये सत्ता के साथ रहे। समग्र क्रांति के साथ लुका-छिपी करते रहे, पर जनाधार न होने के कारण ये चुनाव नहीं जीत पाये। कोशिश फणीश्वरनाथ रेणु, नामवर सिंह आदि ने भी भरसक की थी। यशपाल, नागार्जुन, रामविलास शर्मा, भीष्म साहनी, प्रभाकर माच्चवे, मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय, रांगेय राघव, शिवदान सिंह चौहान आदि अनेक रचनाकार "प्रतिबद्धता" के नाम पर राजनीति से लिप्त रहे। दुर्भाग्य से उनका चिंतन नकारवाद और अराजकतावाद से प्रायः ग्रस्त रहा। साहित्य में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ, जलेस, माओवाद, नक्सल पंथ जैसे कई नारे उछाले। रूस, चीन आदि देशों की सहायता से कई लघु पत्रिकाएँ चलाई, बहुत दिनों तक पद, पुरस्कार, सम्मान, शोध-समीक्षा आदि पर हावी रहे अब हर ओर से हताश होकर राजनीति रहित साहित्य की माँग कर रहे हैं। दक्षिण पंथी लोग भी किंकर्तव्यविमूढ होकर शुद्ध कविता की माँग करते हैं। पिछले दशकों में जनोपयोगी विषय-वस्तु के अभाव-वश इनका अधिकांश लेखन बुद्धि-विलास का उपक्रम बनकर रह गया है। वे मुख्यतः पद-पुरस्कार यानी सुविधाओं की टोहः में रहते हैं। देश ने जो विकास का मानचित्र बना रखा है, उसमें साहित्य की भूमिका न के बराबर होने के कारण ये परमुखापेक्षी हो गये हैं। आवश्यकता है, फिर से जन-जीवन प्रशासन अर्थात् राष्ट्रीय धारा से जुड़ें। मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'भारत भारती' में अँग्रेजी व्यवस्था की बिखिया उधेड़ी है। वह राजनीतीतर नहीं है। दिनकर ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' में जो व्यथा प्रकट की उसमें राजनीतिक भंडाफोड़ भी है। नागार्जुन ने बड़े साहस के साथ भ्रष्टाचारियों पर प्रहार किया है। पहले इसी तरह के आक्रमण भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, प्रेमचंद, निराला आदि करते रहे हैं। इस कालावधि के बीच कुछ साहित्यकारों ने क्षद्द आचरण किया। आपातकाल के बीच अज्ञेय ने "मौन की दहाड़" सुनने का बहाना बनाया। जो समय का साथ नहीं देता, समय चक्र उन्हें नेस्तनाबूद करता हुआ आगे बढ़ जाता है, और तब वे रचनाकार या तो कल्पना लोक में बस जाते हैं या आत्म निर्वासन के शिकार हो जाते हैं। तथ्य यह है कि देश का अस्तित्व राजनीति के बिना सम्भव नहीं है और उससे सम्बद्ध हुए बिना साहित्य की सार्थकता सम्भव नहीं है। हमें यह मानना होगा कि समूची राजनीति अक्षील नहीं है। समर्थ साहित्यकार उसकी कालिख धो सकते हैं। इसीलिए राहुल जी की बात याद आ रही है, "भागो नहीं दुनिया को बदलो।"



सत्य सर्वहारा

सुखमिला अग्रवाल 'भूमिजा'

शील सत्य जप-तप की राहें, पग-पग पर सब खंडित हैं।
ईर्ष्या द्रेष और आडम्बर, जग में महिमा मंडित है।।

विलुप्त नेकियाँ परोपकार, अब लगते हैं सपने से।
सत्य मुजरिम है बिन गवाही, और फैसले लम्बित हैं।।

खान-पान रहन-सहन अब तो, दूषित हुआ आचरण भी।
अजब स्वांग रचे आधुनिकता, मानवता ही व्यथित है।।

चारों ओर दम्भ का मजमा, पूज्य धूर्त ठगी पाखंड।
नकली की हर ओर प्रशंसा, नकली ही अब वंदित है।।

सत्य प्रताङ्गित सीधा-सीधा, राहें बाधित भी उसकी।
वह तो टूटा-फूटा हारा, सबसे वही पराजित है।।



अप्रतिम भारतीय सांस्कृतिक धरोहर 'योग'

विजय रंजन

(सम्पादक 'अवध-अर्चना'/अधिवक्ता)

योग का प्रत्यय भारतीय मनीषा का अप्रतिम सार्वहिती अवदान है। 'योग' निश्चित रूप से अप्रतिम भारतीय सांस्कृतिक धरोहर है। इस फलक पर विचार करते ही स्पष्ट हो जाता है कि सहस्रों वर्षों से भारतीय ज्ञान परम्परा में भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित जो ज्ञान, संस्कार एवं भारतीयता व्याप्त है, उसे ही भारतीय सांस्कृतिक धरोहर माना जा सकता है। 'योग' निर्विवादतः ऐसी ही सांस्कृतिक धरोहर है।

और संस्कृति? संस्कृति सारतया संस्कारों के संक्षेप का ही पर्याय होती है। वहीं, संस्कृति 'सं + स् + कृ + ति' या कि सम्यक् सांस्कारिक सकारात्मक कृति होती है। अतएव, 'संस्कृति' सद् या कि सकारात्मक दकारत्व वाले संस्कारों की वह कृति है जो व्यक्ति और समाज को 'सदत्व' अर्थात् 'सकारात्मक सात्त्विक कर्त्ता-वृत्ति' और 'तद्वत् सकारात्मक क्रियात्मकता' की ओर अग्रसर करती है। तदेव, 'योग' की ओर ध्यान निवेशित करते ही परिस्पष्ट हो जाता है कि 'भा+रत' (ज्ञानशीलता को आगे बढ़ाने में निरत रहने) और 'भारती+य' (देवी भारती के गुणों से आभरित भारतीयता वाली) ज्ञान-परम्परा में अर्थात् भारतीय ज्ञान-परम्परा में योग ऐसा ही भारतीय प्रत्यय है जो हजारों वर्षों से अप्रतिम अवदान के रूप में हमारे यहाँ सिद्धान्ततया एवं व्यवहार्यतया उपभुक्त होता आया है।

और, संस्कार? भारतीय मनीषा के अनुसार संस्कार वस्तुतः जन्म-जन्मान्तर में अर्जित संचित भावानुभाव के संक्षेप होते हैं, जबकि 'भाव'स्वतः मानव-विवेक से उद्भूत 'विचार प्रत्यय' के संक्षेप होते हैं, जबकि मानव-विवेक स्वार्जित ज्ञान, परम्परा, परिवेश और मन-अन्तरमन में संचित मूलाधारिक संस्कारों के व्याज से विनिर्मित और तद्वत् संक्षेपित मानव-प्रज्ञा के फलित होते हैं। इस प्रकार संस्कृति के आधारभूत अवयव (मानव एवं उसके समाज के एकल एवं सामुदायिक, राष्ट्रीय जीवन-मूल्य, जीवन-शैली, ज्ञान, वेश-भूषा, खानपान आदि) मानव-प्रज्ञा, स्थायी एवं संचारी मानवीय भावानुभाव, मानवी-विवेक और इन सबके फलित 'विचार' (विशेषकर मानव ज्ञानकोश में संचित् जन्म-जन्मान्तर के क्रियमाण संस्कारों के समवेत के व्याज से 'संचित विचार') आदि के समवेत फलित होते हैं। इस प्रकार भारतीय मनीषा में 'संस्कृति' पाश्चात्य 'Culture' या 'Cultura' से किंचित् भिन्न प्रत्यय है। इसे सांगीतिक या कलागत परिचर्या मात्र मानना गम्भीर विभ्रम है। इसीलिए संस्कृति को मानव एवं उसके समाज के 'एकल एवं सामुदायिक, राष्ट्रीय जीवन-मूल्य, जीवन-शैली, ज्ञान, वेश-भूषा, खानपान आदि आवयविक मानकों के समग्र के आधार पर आकलित किया जाता है; जिसमें सर्वाधिक प्रभावी अवयव मानव के वैयक्तिक, सामुदायिक, राष्ट्रीय संस्कार और तद्वत् जीवनमूल्य आदि होते हैं। संस्कृति में जन्म-जन्मान्तर के संचित संस्कारों का सम्प्रभाव अति प्रभावशील होता है। वहीं, योग



साधक को सद्संस्कारों से आमण्डित कर उसे सदत्व की ओर अग्रसारित एवम् उन्मेषित करता है। तदेव, मानना होगा कि 'योग' साधक के वैयक्तिक आचार, विचार, मानसी संवेग और संस्कार आदि में सकारात्मक और अति संप्रभावी योगदान अवदानित करता है। कह सकते हैं कि ज्ञानशील भारत के भारतीयों की देवी भारती के दैवीय सात्त्विक गुणों से अनुप्राणित जीवन-दृष्टि के समानुरूप 'योग' एक सर्वथा संप्रभावी सकारात्मक सात्त्विकता आदि सारस्वत संस्कारों को जाग्रत करने का और, तदेव बहुविध शारीरिक मानसिक उत्कर्ष प्राप्त करने का अप्रतिम संसाधन है।

तथ्यतया योग की सन्दर्भगत विशेषताओं के ब्याज से २१ जून २०१४ को संयुक्त राष्ट्रसंघ में भाषण करते हुए मा० प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक मंच से आविश्व योग को अपनाने की और प्रतिवर्ष २१ जून को 'विश्व योग दिवस' के रूप में मनाने की अपील की थी। इस अपील को अंततः २०१५ में विश्व-मंच पर संस्थीकृति प्राप्त हुई और इस भारतीय प्रत्यय की सर्वश्रेष्ठ उपादेयता को आ-ग्लोब वैश्विक संस्तर पर स्वीकार किया गया। तबसे प्रतिवर्ष वर्ष के सबसे बड़े दिन २१ जून को मानव-जीवन के आयुष्य को बढ़ा करने की प्रतीकात्मकता के साथ 'विश्व योग-दिवस', 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' या कि 'योग दिवस' के नाम से आविश्व समारोहित किया जा रहा है। तदेव, वैश्विक स्तर पर अरबों की संख्या में लोग प्रतिवर्ष २१ जून को तो योगाभ्यास करते ही हैं, वर्ष के शेष दिवसों में भी करोड़ों लोगों द्वारा योग अपनाए जाने का चलन परवान चढ़ रहा है। विदेशीय अपसंस्कारों के दुष्फलित से मानव-शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा को पावन-दर-पावन कराने वाले भारतीय उपक्रम 'योग' को भले ही वर्तमान में 'योगा (Yoga)' के रूप में अपनाया जा रहा है और सम्प्रति योग के अष्टांगों में से मात्र तृतीय अंग 'आसन' (शारीरिक व्यायाम) और चतुर्थ अंग 'प्राणायाम' को ही अधिकतमतया अपनाया जा रहा है तदपि, इस तरह श्रेष्ठ भारतीय प्रत्ययः योग के प्रति विश्व का रुद्धान बढ़ा है, यह उपलब्धि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

'योग' निर्विवादतः महान् भारतीय महर्षि पतंजलि द्वारा ईस्वी शती के प्रारम्भ के हजारों वर्ष पूर्व 'योग-दर्शन' के स्वरूप में आविष्कृत और आजीवन प्रचारित-प्रसारित किया गया। अनेक विचारक इसे १५०-२०० ई० पू० से उद्भूत बताते हैं; जबकि महर्षि पतंजलि का जीवनकाल लोकश्रुति के अनुसार अति प्राचीन है। हमारे षड्दर्शन में समेकित है योग।

तथ्यतया 'योग', जैसा कि इसके नामाक्षरों से 'य + उ + ग' से भी प्रकट है, रागद्वेषादि मनोविकारों से रहित 'यति-मानसिकता की ओर गमन' का उत्कर्षवाही उपस्कर है। स्कन्दपुराण के अनुसार 'य' कार विष्णु रूप है, तदेव 'य + उ + ग' का अर्थायन 'विष्णु की ओर गमन' या कि 'वैष्णवी उत्कर्ष की ओर गमन' के स्वरूप में भी अर्थायित किया जाता है। इस प्रकार योग के नामाक्षरों से ही प्रकट है कि यह सर्वपोषक, सर्वकल्याणक, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, परम शान्ति के संस्थापक श्री विष्णु के सद्गुणः वैराष्ट्र, उदात्तता, पावनता, दैवीयता, सर्वकल्याणकता, सर्वव्यापकता, सात्त्विकता के साथ-साथ 'तमसः परस्तात' और अनय-निरोधक, राधसत्त्व के विनाशक आदि गुणों की ओर भी प्रस्थान, अनन्त यात्रा की ओर गमन का परिचायक है। भारतीय

मनीषा के अनुसार व्यवहार्यतया योग व्यक्ति की क्रियात्मकता-समग्र का वह सकारात्मक सात्त्विक स्वरूप है जिसकी साधना से व्यक्ति का शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, आत्मा और जन्म-जन्मान्तर के संस्कार तक परिष्कृत हो जाते हैं। व्यवहार्यतः योग व्यक्ति को और ऐसे व्यक्तियों के समाज को श्रेष्ठतम संस्तर तक अपनी शक्तियों और क्षमताओं को प्रकर्षित करने में समर्थ बनाता है। योग में उत्कृष्ट सकारात्मक सात्त्विक क्रियात्मकता को प्रकर्षित करने की शक्ति सन्निहित होने के ब्याज से गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं - 'योगक्षेमम् वहाम्यहम्'। इसी विशिष्ट प्रवृत्ति वाले योग की सकारात्मक सात्त्विक क्रियात्मकता वाली विशिष्ट प्रकृति के ब्याज से श्रीमद्भगवद्गीता के १८ अध्यायों में श्रीकृष्ण विविध १८ प्रकार की सकारात्मक सात्त्विक क्रियात्मकताओं को 'योग' का नाम देते हैं। यथा- निष्काम कर्मयोग/नैष्कर्म्य योग, ज्ञानयोग, सन्यास योग आदि।

वास्तव में भा+रतीय, भारती+य चैतन्य के प्रस्तार-क्रम में परमोपयोगी श्रेष्ठतम शारीरिक, मानसिक उपस्कर आष्टांगिक योग नाम्नी इस भारतीय प्रत्यय में स्वयं में इतनी श्रेष्ठताएँ हैं और इसकी प्रासंगिकताएँ इतनी मूल्यवान् हैं कि देर-सबेर सम्पूर्ण विश्व योग को इसके अष्टांगों सहित विस्तृत आयाम में अपनाएगा अवश्य। सर्वकल्याणक सर्वोपयोगी भारतीय चिन्तनधारा के प्रमुख वैशिष्ट्य 'योग' की वैश्विक स्तर पर प्रासंगिकता प्रथमदृष्टया संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रसंगित घोषणा से ही आकलित की जा सकती है, इसलिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ वैश्विक संस्तर पर ऐसा संस्थान है जो भारी विचार-विमर्श के उपरान्त ही आविश्व कल्याणक और सर्वोपादेय पाए जाने पर ही किसी विचार, प्रत्यय, प्रक्रिया, अभिक्रिया या कि वस्तु आदि की महत्ता को सांस्थानिक स्वीकृति प्रदान करता है। निश्चय ही, संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रसंगित घोषणा के नेपथ्य में योग की निज की श्रेष्ठताओं का बल तो है ही, तद्रिषयक भारतीय श्रेष्ठताओं को वैश्विक स्तर पर अधिमान्य कराने में सचेत हमारे राष्ट्रवादी, भारतीयतावादी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर्मठ प्रयासों का और पतंजलि पीठ, हरिद्वार, उत्तर प्रदेश, भारत के योगाचार्य स्वामी रामदेव के योग-प्रसार-उपक्रमों का प्रशंसनीय योगदान भी प्रभावकारी रहा है।

जात हो कि भारतीय मनीषा में योग की बड़ी महत्ता सुस्थापित है। भारतीय वाङ्मय में पातंजल योग दर्शन, श्रीमद्भगवद्गीता, योगवासिष्ठ, बृहदारण्यकोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, स्कन्दपुराण, योगचूडामणि आदि ग्रंथों में 'योग' का विशद गुणगान अभिगानित है। योग को यहाँ के ६ ख्यात प्रमुख दर्शनों में स्थानित किया गया है। योग की महत्ता का गान अनेक महान् भारतीय मनीषियों ने भी किया है।

'योग' शब्द के ३२ अर्थ वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश और अन्यान्य शब्दकोशों में अंकित हैं, वहीं, 'योग' शब्द से जुड़े हुए या कि उसके पर्याय रूप में ७९ शब्द भारतीय जन-जीवन में घुले-मिले हैं। इतनी सघन पैठ है योग की भारतीय लोकमन में।

महर्षि पतंजलि प्रणीत योगदर्शनम् में योगसूत्र 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' के अतिरिक्त श्रीकृष्ण के श्रीमद्भगवद्गीता में 'समत्वं योग उच्यते', 'योगक्षेमम् वहाम्यहम्', 'योगः कर्मसु कौशलम्' प्रभृति सूत्रवाक्यरूप उवाच् यहाँ के लोकमन में जाने-अनजाने परिव्याप्त हैं। 'श्रीमद् भगवद्गीता (२/४८) में 'सिद्ध्यसिद्ध्यो समो भूत्वा समत्वम् योग उच्यते' उच्चित करते हुए महाज्ञानी श्रीकृष्ण की देशना है कि योगबुद्धि से सिद्धि-असिद्धि

की चिन्ता छोड़कर सर्वत्र 'सम रूप हो जाने पर समत्व की प्राप्ति होती है, उसे ही योग कहा जाता है'। श्रीमद्भगवद्गीता के विभिन्न अध्यायों में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने 'योगयुक्त योगी को नियत-मानस, बलित-मानस, विगत कल्प, दुःख-विनष्टकर्ता, परम-स्थान प्राप्त करने वाला, उत्तम सुख पाने वाला, आत्मा को शुद्ध करने वाला, ब्रह्म-मुनि और संकल्पबद्ध सन्यस्त कर्म-सन्यासी बताते हुए 'योगयुक्त, योगविद्व' होने का निर्देश भी दिया है। श्रीमद्भगवद्गीता के विभिन्न १८ अध्याय 'योग के विविध प्रकार': ज्ञानयोग, कर्मयोग, सन्यास योग आदि से समन्वित हैं।

योग से लभ्य विविध प्रलाभों के बारे में श्रीमद्भगवद्गीता, स्कन्दपुराण, श्रेताश्वतरोपनिषद्, पातंजल योगदर्शन, 'योगचूडामणि', 'महोपनिषद्', 'ज्ञानेश्वरी', 'रघुवंशम्' आदि ग्रंथों में विस्तृत उल्लेख है। श्रीमद्भगवद्गीता के ७वें अध्याय में योगसिद्ध योगी को ज्ञान-विज्ञान से तृप्त, निर्लोभी, जितेन्द्रिय और उच्च स्थान में स्थित बताया गया है। स्कन्दपुराण में योगी को विशिष्ट आभा से आमण्डित बताया गया है जिससे अपरिचित आगन्तुक भी योगी के प्रति श्रद्धा और प्रेम से अनुरक्त हो जाता है। योगी को मृदुभाषी, सत्यवक्ता निर्भय और सर्वदा प्रसन्नवदन बताते हैं स्कन्दपुराणकार भी। श्रेताश्वतरोपनिषद्कार योगी को आरोग्यवान्, मलोलुप्सं, शुभ शरीर-गंध वाला और आभावणी बताते हैं। पातंजलयोगदर्शनम् में योगी को ऋतम्भरा प्रज्ञा से समन्वित और ईश्वर-प्राप्ति में सक्षम बताया गया है। योगी को योग के सिद्ध होने पर अष्ट सिद्धियाँ की प्राप्ति भी बताई गई है वहाँ। 'योगचूडामणि' के अनुसार 'योगासन' से रोगों का नाश, 'प्राणायाम' से पापों का नाश, 'प्रत्याहार' से मन के विकार एवं अचंचलता से शान्ति, 'धारणा' से धैर्य की प्राप्ति, 'ध्यान' से निर्दिष्ट लक्ष्य पर एकाग्रता, चैतन्य की प्राप्ति और समाधि से परम शान्ति, मोक्ष की प्राप्ति लभ्य हो जाती है। महोपनिषद् में कहा गया है- 'मनःप्रशमनोपायोयोगः इत्याभि धीयते' अर्थात् 'मन के प्रशमन का उपाय योग है', इसीलिए योगी को 'छिन्न संशय' भी माना गया है। संत ज्ञानेश्वर भी ज्ञानेश्वरी में योगी को देवों का भी देव कहते हैं। उनके अनुसार योगी उदात्त चित्त और उदात्त विचार वाला, असंकीर्ण होता है। वह एकेश्वर का साक्षात्-दर्शन करने में सक्षम होता है। महान् योगी भर्तृहरि के अनुसार योगसाधक की स्वरतंत्री में मधुरता आ जाती है, वह विरक्त काम, चिन्तनशील महात्मा, अटूट भक्त और वास्तविक अर्थों में मनसा-वाचा-कर्मणा व्यवहार में सन्यासी हो जाता है। योग के माध्यम से वह सामान्य जीवन-शैली से ऊपर उठ कर कर्मबन्धन से परे हो जाता है और सर्वत्र शिव अर्थात् परमात्मा के दर्शन करता है। 'रघुवंशम्' में कविकुलगुरु कालिदास भी योग का गुणगान करते हुए कहते हैं कि रघुवंशी राजा योग के माध्यम से प्राण-त्याग करते थे। ऐसे उल्लेख अनेकानेक हैं। कुल मिलाकर भारतीय वाङ्मय में 'योग' की महिमा का भरपूर गुणगान है।

बताते चलें कि जटिल भाव-भंगिमा और किंचित् असहज प्रक्रिया वाले 'योग' शब्द का व्यवहारिक एवं सहज ग्राह्य अर्थ है 'जोड़ना' अर्थात् दो वस्तुओं को परस्पर इस तरह जोड़ना कि दोनों की स्वतंत्र स्वायत्त इयत्ता एक-दूसरे में समाहित हो जाए। 'योग' इसी आशय का अभिवाचक है। जोड़ने की क्रिया को इंजीनियरिंग की तकनीकी भाषा में वेल्डिंग (welding) कहा जाता है। वेल्डिंग दो वस्तुएँ चाहे वे दो तार हों, दो छड़ हों, दो



पिण्ड हों, उनको आपस में इस ढंग से जोड़ा जाता है कि प्रसंगित योग-अभिक्रिया के समान एक की स्वतंत्र इयत्ता दूसरे में समाहित हो जाए। इंजीनियर बताएंगे कि 'वेलिंग' तभी पक्की होगी जब जोड़ने वाली वस्तु/पिण्ड परिशुद्ध शब्दान्तर से अशुद्धताओं से पूर्णतया रहित हो। आध्यात्मिक शब्दावली में 'योग' ईश्वर-अंश जीवात्मा (मानव आत्मा) को उसके मूल अंशी ईश्वर या कि परम-आत्मा या कि परब्रह्म या कि सर्वात्मा या कि विश्वात्मा (weltgeist) से जोड़ने के अर्थ का वाचक है। तदेव, तद्वत् सतत उच्चतर आत्मिक विकास का संसाधन है योग। इसीलिए भारतीय मनीषियों ने 'योग' को मोक्ष-प्रदानक बताया है। अतएव, आध्यात्मिक जगत् में योग से एक विशिष्ट अधिलक्ष्य 'मोक्ष' अर्थात् 'मानव-शरीर में स्थित जीवात्मा' या कि 'अनेकानेक अशुद्धियों वाले चित्त से सहयुजित आत्मा' का योग के माध्यम से शुद्ध हो जाने पर परमात्मा में पूर्ण समेकन अर्थायित है। मानव की जीवात्मा में स्थित आत्मा को यदि परमशुद्ध परमात्मा से जोड़ना है तो वेलिंग के नियमानुसार विज्ञान की भाषा में कहें तो जिससे जोड़ा जाना है और जिसे जोड़ा जाना है, उन दोनों के समरूप या कि अशुद्धि रहित या कि परम विशुद्ध होने पर ही सजातीय आकर्षण बल (Cohesive Force) के कारण मजबूत और स्थायी जुड़ाव फलित हो सकेगा। एतदर्थ, आषांगिक योग-मार्ग अपना कर चित्तवृत्तियों के निरोध से मन या कि चित्त को निरोधित चित्तवृत्तियों वाला बना कर आत्मा को परमात्मा के समान ही शुद्ध बनाना होगा। वस्तुतः चित्त की वृत्तियाँ ही वे अशुद्धियाँ हैं, जिनसे आग्रस्त मानव का मन, बुद्धि, मस्तिष्क उसके मानसिक, वाचिक, कायिक कार्यों को तो अशुद्ध करते ही हैं, अपितु इन अशुद्धियों के मालिन्य से मानव-शरीर में स्थित विशुद्ध ईश्वरांश वाली आत्मा कल्पित होकर मानव की 'जीवात्मा' के रूप में जानी जाती है। योग के माध्यम से इन अशुद्धियों के दूर हो जाने पर मानव की जीवात्मा में स्थित आत्मा शुद्ध हो जाती है और परमात्मा से स्थायी जुड़ाव अर्थात् मोक्ष-प्राप्त करने के योग्य बन जाती है। इसीलिए पतंजलि ने योग अर्थात् परमात्मा से आत्मा के जुड़ाव के लिए चित्तवृत्ति-निरोध को अति-अति आवश्यक बताते हुए चित्तवृत्ति-निरोध को ही 'योग' का नाम दिया है।

और, योग द्वारा साधक में किस प्रकार से सर्वदा प्रासंगिक परिवर्तन कारित होता है इसे समझने के लिए जानना होगा कि आइंस्टीन प्रभृति वैज्ञानिक द्रव्य (Matter) एवं ऊर्जा (Energy) के अस्तित्व को स्वीकारते हैं। वे द्रव्य और ऊर्जा को परस्पर अन्तर्परिवर्तनीय मानते हैं। तदनुसार, वैज्ञानिक शब्दावलि में कहें तो कहना होगा कि परमात्मा में ऊर्जा का परिमाण अर्थात् क्लान्टम मानवात्मा की ऊर्जा के परिमाण अर्थात् क्लान्टम के सापेक्ष अत्यधिक होता है और मोक्ष या कि परमात्मा से आत्मा का जुड़ाव तब तक नहीं हो सकता जब तक कि दोनों के क्लान्टम एकसमान या लगभग एकसमान न हो जाएँ। इस प्रकार, योग के आध्यात्मिक लक्ष्य 'मोक्ष-प्राप्ति' की इस पृष्ठभूमि में कह सकते हैं कि छोटे से ऊर्जापुंज को बहुत बड़े ऊर्जा पुंज से समेकित करने की प्रविधि योग है। तदेव, जिस तरह बड़े ऊर्जा पिण्ड से योगित होते ही छोटे ऊर्जा पिण्ड की ऊर्जा एवं शक्ति बढ़ जाती है, कुछ वैसी ही अभिक्रिया होती है योग से योग-साधक के तन-मन में। योग द्वारा मानव के ईश्वर से जुड़ने की प्रक्रिया में न केवल मानव के मन-तन को वरन् उसके मन और आत्मा को भी अपार शक्ति प्राप्त होती है। इस अपार शक्ति से आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ वाणी में माधुर्य, शरीर में आकर्षक गंध, व्यक्तित्व में प्रभावशीलता और

चुम्बकीय आकर्षण सदृश अनेक शारीरिक, मानसिक लब्धियाँ प्राप्त होती हैं योग-साधक को। ये लब्धियाँ मानव के लिए व्यक्तिगत ही नहीं, वरन् सामाजिक महत्व भी रखती हैं। फलतः आधुनिक भौतिकतावादी युग में भी योग की प्रासंगिकता सर्वस्वीकार्य हैं भले ही आज कतिपय कथित विद्वान् विज्ञान के नाम पर अध्यात्मवाद आदि के नाम से बिदकते रहें।

जहाँ तक योग की प्रविधियों का विन्यास है, इस फलक पर महर्षि पतंजलि ने 'चित्तवृत्तियों के निरोध' के क्रम में योग के आठ अंग बताए हैं। ये अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इसे ही 'अष्टांग योग' या कि अष्टांगिक योग कहा जाता है। इन अंगों को क्रमानुसार सिद्ध करने करने वाला योग-साधक अंततः जीवन्मुक्ति की अवस्था प्राप्त कर मोक्ष का अधिकारी बनता है।

अष्टांग योग के प्रथम अंग 'यम' पाँच हैं। 'यम' के अंतर्गत है 'अहिंसा' अर्थात् अकारण अन्य प्राणियों का मनसा-वाचा-कर्मणा उत्पीड़न, शोषण, हानि न करना, 'असत्य न बोलना' अर्थात् सदा सत्य बोलना, अस्तेय अर्थात् चोरी न करना, ब्रह्मचर्य अर्थात् इन्द्रिय-निग्रह और अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक उपभोग्य भौतिक साधनों, सामग्रियों आदि को संग्रहित न करना।

अष्टांग योग के द्वितीय अंग नियम भी पाँच हैं - प्रथम है शौच अर्थात् तन-मन की शुचिता बनाए रखना, द्वितीय है सन्तोष अर्थात् लोभरहित वृत्ति, पराकाष्ठा तक किए गए परिश्रम के पश्चात् कृत कार्य के प्राप्त परिणाम में प्रसन्न रहना, तृतीय है तप अर्थात् भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्वों को संयमपूर्वक सहन करना, चतुर्थ है स्वाध्याय अर्थात् लोकहितकारी शिक्षा, उपदेश, विचारणा देने वाले एवं आसजनों द्वारा सृजित शास्त्रादि का अध्ययन करना और प्रणव-जप करना अर्थात् ईश्वर को कभी विस्मृत न करना और पाँचवाँ ईश्वर-प्रणिधान अर्थात् अपने समस्त कर्मों को ईश्वरार्पण करते हुए निष्पन्न करना। इसे ही गीता में योगेश्वर कृष्ण ने 'नैष्कर्म्य' या कि 'निष्काम कर्मयोग' कहा है।

योग की प्रासंगिकता के क्रम में समीचीन है यह बताना कि यम-नियम का जुड़ाव मानव के लौकिक जीवन की उन्नति से भी है।

योग का तृतीयांग है 'आसन' अर्थात् शरीर की विविध मुद्राओं में बैठना, लेटना आदि। अधुना युग में 'आसन' योग का सर्वाधिक प्रचलित स्वरूप है। आसन से जीव-विज्ञान के अनुसार विविध अंतःस्नावी ग्रन्थियों (एण्ड्रोक्राइन ग्लैण्ड्स) से निःसृत हारमोन्स, साथ ही अनेकानेक अंगों यथा अनेक आमाशयी पैप्टिक ग्रन्थियों, ड्यूओडिनम, लीवर, पैंक्रियाज, आईलेट्स ऑफ लैंगरहैन्स आदि-आदि से निःसृत होने वाले अनेक पाचक रस आदि स्वतः निःसृत होते रहते हैं जिनके अनियमित या कम-अधिक होने से अनेकानेक बीमारियाँ घेर लेती हैं। इनका उत्पादन एवं स्रवण शरीर की विविध मुद्राओं अर्थात् आसनों के अभ्यास से घटाया-बढ़ाया जा सकता है। योगासन व्यवहारर्यतया शारीरिक व्यायाम हैं जो मानव के शरीर के चयापचय (मेटाबोलिज्म) को सुचारू बनाता है। तदनुसार योगासनों के कुछेक दिन, कुछेक माह के अभ्यास से अनेक शारीरिक रोग स्वतः निरोधित हो जाते हैं।

योग का चतुर्थ अंग है 'प्राणायाम'। लोक में सम्प्रति 'आसन' के बाद सर्वप्रचलित योगांग है 'प्राणायाम'। प्राणायाम वस्तुतः 'श्वास-प्रश्वास' पर नियंत्रण करने की अभिक्रिया है जो भौतिक रूप से आक्सीजन की अधिकतम मात्रा को शरीर के अन्दर पहुँचाती है और शरीर में उत्पन्न कार्बन-डाई-ऑक्साइड आदि विषाक्त वायु को शरीर से बाहर करती है। प्रकट है कि शरीर को समुचित आक्सीजनयुक्त वायु मिलेगी तो शरीरांगों के समुचित सक्रिय होने पर अंतःश्वासी ग्रंथियों आदि से निःसृत होने वाले हारमोन एड्रीनेलिन, डोपामीन, सोरोटिन आदि का निःसरण भी संतुलित हो जाएगा, तदेव, प्राणायाम के सुफल से अनावश्यक चिन्ता, नैराश्य, कुण्ठा आदि से छुटकारा मिल जाता है जिससे साधक में आत्मविश्वास बढ़ता है और उसका मन प्रफुल्लित होने से उसके शरीराभा, मुखाभा में आशातीत चमक बढ़ जाती है।

योग का पाँचवाँ अंग 'प्रत्याहार' है जिसका अर्थ है 'मन का निरोध होना' जिससे इन्द्रियाँ अर्थात् आँख, नाक, कान, स्वादेन्द्रिय जिह्वा, स्पर्शेन्द्रिय त्वचा अपने-अपने विषयों से आसक्ति-रहित होकर व्यवहार करें। प्रत्याहार द्वारा साधक एकाग्रता द्वारा अपने मन को इस प्रकार का बनाता है कि नेत्र दृश्य को, कान ध्वनि को, नाक गंध को, जिह्वा स्वाद को, त्वचा स्पर्श को आसक्तिरहित होकर ग्रहण करे, इन्द्रिय-विषयों की मोहकता से आसक्त होकर बँध कर अपने कर्तव्य और ईश्वर से विमुख न हो। ऐसा तभी सम्भव है जब साधक द्वारा सात्त्विक आहार द्वारा अपने विचार और आचार को सात्त्विक रखे। प्रत्याहार प्रकारान्तर से साधक द्वारा सात्त्विक आहार, विहार, विचार को अपनाने का निर्देश होता है। वास्तव में अनेक शारीरिक भौतिक आधि-व्याधि का कारण, दुःख का कारण मानव-मन की प्रत्युत चित्त की अस्थिरता एवं चंचलता होती है जबकि प्रत्याहार मन या चित्त को शमित करने का सक्षम उपाय है जिससे योगी को आधि-व्याधि से छुटकारा स्वतः लभ्य हो जाता है।

योग के छठें अंग को 'धारणा' कहते हैं। 'चित्त को किसी भी विषय या वस्तु पर स्थिर करके चित्त की वृत्तियों को स्थिर अर्थात् चंचलतारहित करना' ही धारणा है। वह विषय या वस्तु जिस पर चित्त स्थिर करके चंचलतारहित बनाया जा सकता है, वह अपने ही शरीर का कोई अंग यथा मूर्धा, मस्तक, हृदय, नासिकाग, नाभि आदि अथवा कोई बाह्य विषय जैसे दीपक की लौ, चक्र, ओंकार-जप, गायत्री मंत्र आदि का जप आदि हो सकता है। तदेव, 'धारणा' में साधक को मन-वचन-कर्म से विशिष्ट आत्मिक, आध्यात्मिक उन्नयन के अधिलक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन को वश में करके एकाग्र करना होता है। यहीं समीचीन है यह कहना कि धारणागत एकाग्रता मात्र योग-मार्ग हेतु ही नहीं, अपितु जीवन के अन्यान्य परिप्रेक्ष्यों में भी लाभकारी और सर्वदा प्रासंगिक है।

योग का सातवाँ अंग है 'ध्यान'। किसी अंतः या बाह्य विषय पर एकाग्र कर चंचलतारहित किए हुए चित्त से सञ्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म या कि परमेश्वर में अपने मन की वृत्ति अर्थात् अपनी चित्तवृत्ति को सतत् बँधे रखना ही 'ध्यान' कहलाता है। इस प्रकार ध्यान में साधक किसी विशिष्ट निर्दिष्ट लक्ष्य पर अपना 'ध्यान' (प्रकारान्तर से अपनी मनस्-क्रिया या कि अपने विचार को) संकेन्द्रित करता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि

इस योगांग से साधक में एकाग्रता बढ़ती है, कर्म-कुशलता प्राप्त होती है और मानसिक शान्ति और आनन्द की अनुभूति बढ़ती है।

‘समाधि’ योग का अन्तिम और आठवाँ अंग है। ‘ध्यान’ का स्वतःप्राप्त परिणाम होती है ‘समाधि’। ‘बाह्य संसार से पूरी तरह विमुख होकर मानव की चित्तवृत्तियों का पूरी तरह अन्तर्मुखी और अचंचल होना’ समाधि है। ‘पातंजल योगदर्शनम्’ में समाधि के ४ पाद (अर्थात् चरण या कि अवस्थाएँ) बताई गई हैं। इन्हें क्रमशः १. साधनपाद, २. समाधिपाद, ३. विभूतिपाद, ४. कैवल्य पाद का नाम दिया गया है। पातंजलि योगदर्शनम् के अनुसार योग-समाधि की सिद्धावस्था के तृतीय चरण ‘विभूतिपाद’ में साधक को अनेक सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं। समाधि के चौथे चरण में भी साधक को अनेक सिद्धियाँ और कैवल्य की सिद्धि प्राप्त होती है। कहते हैं समाधि की अवस्था में ही योगी को परमपिता परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर और अपनी आत्मा के विशुद्ध स्वरूप की दृश्यरूप साक्षात् अनुभूति होती है। समाधि के द्वारा साधक ‘निर्वाण या कि मोक्ष की प्राप्ति हेतु आवश्यक चित्-स्थिति’ अर्थात् ‘जीवन्मुक्ति’ प्राप्त कर लेता है। समाधि से फलित ‘जीवन्मुक्ति’ की स्थिति में ही साधक की बुद्धि अति परिष्कृत होकर कृतम्भरा प्रज्ञा की अवस्था प्राप्त कर लेती है जिससे साधक को अनेक सिद्धियाँ स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। जीवन्मुक्ति की स्थिति में देह त्यागने पर साधक को मोक्ष या निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है।

‘जीवन्मुक्ति’ की दशा में साधक व्यवहार्यतः पंचक्लेशों से मुक्त हो जाता है जिससे उसके चित्त में लोभ, राग, द्वेष, व्यग्रता, कुण्ठा, हताश, नैराश्य, क्रोध, हिंसा-भाव आदि-आदि नकारात्मक भावनाएँ पूर्णतया विलोपित हो जाती हैं। इसीलिए वह सबके प्रति निष्पक्ष एवं न्याययुक्त व्यवहार करता है। पंचक्लेशों से मुक्त हो जाने पर जीवन्मुक्त योगसाधक के मनोमस्तिष्क में अतीव शान्ति और आनन्द की अनुभूति रहती है। कहना न होगा कि मानव-समाज का प्रत्येक सदस्य यदि समाधि के अभ्यास से प्राप्त जीवन्मुक्ति अवस्था प्राप्त कर राग-द्वेष आदि नकारात्मकताओं से विमुक्त हो जाए, तो समाज में अपराध-वृत्ति स्वतः कम होगी और तब सामाजिक शान्ति स्वयमेव प्राप्त हो जाएगी। इस तरह ‘समाधि’ की भी सार्वकालिक, सार्वभौमिक विशिष्ट प्रासंगिकता है।

योग को मोक्षप्रदाता कहा जाता है इसलिए कि ‘योग’ अपने अष्टांगों द्वारा अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि द्वारा जीवात्मा की (जो प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनन्दमय कोश नामक चार सूक्ष्म आवरणों से आवृत्त ईश्वरांश विशुद्ध आत्मा है, उस जीवात्मा की) अशुद्धियों को पर्त दर पर्त निराकृत कर जीवात्मा को अपने विशुद्ध आत्मिक स्वरूप को प्राप्त कराने में और तदनुसार अंशी को अंश से योगित करने में समर्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार ‘योग’ वास्तव में वह उपक्रम है जिसके द्वारा तन-मन, बुद्धि की अशुद्धियों को निराकृत करके मानव-देह में स्थित जीवात्मा का परिष्कार किया जाता है। ऐसा परिष्कार मानव-जीवन को उच्चतर, श्रेष्ठतर बनाने के क्रम में भी सर्वथा उपयोगी है। अतएव, ‘योग’ भारतीय या कि सनातनी चिन्तन धारा का आध्यात्मिक प्रत्यय है, तदेव, पाश्चात्य अपसंस्कारों के दुष्प्रभाव में नाक-भौं सिकोड़ कर योग को त्याज्य मानने के बजाय श्रेयस्कर होगा कि योग की वस्तुनिष्ठ

सार्थकता को, तद्वत् वस्तुनिष्ठ सर्वोपयोगिता को, स्वीकार किया जाए जो नितान्त सुतार्किक और सर्वथा सुसंगत स्वयंसिद्ध है।

बताते चलें कि उक्त पातंजलि योग-सूत्र के अष्टांगिक योग प्रविधियों के अतिरिक्त योग के सन्दर्भ में भारतीय मनीषा में दो अन्य प्रमुख सूक्त-कथन भी उल्लेख्य हैं- १. योगक्षेमम् वहाम्यहम्, २. योगः कर्मसु कौशलम् । दोनों सूक्त श्रीमद्भगवद्गीता में अध्याय ९ में महाज्ञानी योगिराज विराट् पुरुष श्रीकृष्ण द्वारा प्रकथित हैं। 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' का अर्थ है - योगी द्वारा योगमार्ग में प्राप्त उत्तरोत्तर यौगिक स्थितियों का क्षेम अर्थात् रक्षण का दायित्व विराट्पुरुष या कि परमात्मा स्वयं निर्वहित करते हैं। कहने का आशय यह है कि योग-मार्ग में प्रवृत्त साधक शीघ्र ही परमात्मा की इतनी कृपा एवं निकटत्व प्राप्त कर लेता है कि साधक की यौगिक उपलब्धियों का रक्षण करने के लिए अर्थात् साधक को योग-मार्ग से स्वलित न होने देने वाली स्थितियाँ प्रदान करने की आश्वस्ति परमात्मा स्वयं प्रदान करता है।

दूसरा सूक्त 'योगः कर्मसु कौशलम्' में श्रीकृष्ण ने कर्म को कुशलता से सम्पन्न करना भी योग कहा गया है। इसका वैखरी, लक्षणा और व्यंजनापरक अर्थ विचक्षण है। वास्तव में कुशलता से कर्म करना तभी सम्भव है जब चित्त की वृत्तियों की पूर्ण चंचलता को अर्थात् चित् के इधर-उधर भटकाव को अंकुशित और निरोधित कर पूर्ण एकाग्रता एवं तन्मयता से कर्म किया जाए। इस विधि द्वारा कर्म करने से ही कर्म में न केवल सुधरता और कुशलता आती है, वरन् तभी कर्म करने का उद्देश्य भी पूर्ण होता है। इस सूक्त की भी वैयक्तिक एवं सामाजिक उपादेयता अपरिमित है।

समीचीन है यहीं यह कहना भी कि 'योग' शब्द और उसकी प्रक्रिया सहज सरल नहीं है, अपितु अति निगृह है। तदपि योग को व्यवहारतया मनसा-वाचा-कर्मणा अपनाना असम्भव नहीं है और यह सर्वथा मानव-समाज के लिए परमोपादेय है इसलिए कि 'योग' चित्तवृत्तियों का निरोध करता है। यह निरोध आवश्यक इसलिए है कि चित्तवृत्तियाँ पाश्चात्य मनोविज्ञानी मैकडूगल द्वारा इंगित १४ मानी जाएँ अथवा भारतीय मनीषियों द्वारा प्रणीत ४९, वे सभी ऐन्द्रिक ज्ञान से पल्लवित तदेव, ऐन्द्रिक ऐषणाओं से आभरित होती हैं। साथ ही, वे ऐन्द्रिक ऐषणाओं को प्रज्ज्वलित करने में भी समर्थ होती हैं। चित्तवृत्तियाँ प्रायः रजस्, तमस् प्रवृत्तियाँ कारित करती हैं। फलतः मानव-मन अविद्या, अहंकार, राग-द्वेष, अभिनिवेश आदि पंचक्लेश तथा पंचविकार आदि से ग्रसित होकर सतत अधोगामी होता जाता है। वहीं, ऐसी प्रवृत्तियों से प्रसूत मनस्-अवरोह मानव से अनेक नैषध कर्म, हेय कर्म, अपकर्म, पाप कर्म, हिंसा आदि भी करा लेने में समर्थ होता है। दूसरी ओर, वे चित्तवृत्तियाँ जो प्रकटतया सात्त्विक दिखती हैं, वे भी व्यक्ति में अहम् उत्पन्न करने में सक्षम होती हैं। अहम्वादी व्यक्ति भी अंततः रजस्, तमस् से आक्रान्त हो जाता है। अतएव, परम शुद्ध, परम सात्त्विक और राग-द्वेषादि चित्तवृत्तियों से सर्वथा रहित, परम शान्त परमात्मा से मानव-शरीर में स्थित आत्मा या कि मानव की जीवात्मा के योगित होने के लिए चित्तवृत्तियों का समुचित निरोध वैयक्तिक, सामाजिक एवं सांस्कारिक हितसाधन हेतु अपरिहार्य है।



परिस्पृष्टतया 'योग' न तो मात्र आसन या कि शारीरिक व्यायाम है और ना ही यह मात्र प्राणायाम ही है। हाँ, योग के उपरि इंगित अन्यान्य अंग के मनसा-वाचा-कर्मणा पालन के साथ ही आसन और प्राणायाम आदि को भी सिद्ध किया जाए, तो योग मानव के लौकिक जीवन में बहुविध उत्कर्ष प्राप्त करने का अप्रतिम संसाधन तो है ही, साथ ही यह मानव की आध्यात्मिक उन्नति को भी प्रशस्त कर देता है। योग के अष्टांगों से साधक के तन-मन-बुद्धि, चित्त, जीवात्मा आदि की शुद्धता, सात्त्विकता, पावनता आदि सतत उत्कर्षित होती जाती है जिससे साधक को कल्पनातीत वैयक्तिक और सामाजिक प्रलाभ प्राप्त होता है।

इसप्रकार, अष्टांगिक योग सुचारू वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक हितकारी प्रक्रियापरक प्रविधि है जिससे साधक मनुष्य को यति-मनस्त्विता अर्थात् राग-द्वेष रहित, निस्पृह, निर्लोभी, परोन्मुखी, सर्वकल्याणक मनस्त्विता और तन-मन-बुद्धि की निर्मलता प्राप्त होती है। तदेव, वर्तमान के भौतिकतावादी बाजारवादी युग में लोभ-मोह स्वार्थ आदि से ऊपर उठ कर यति-मानसिकता प्रदान करने वाले योग को वर्तमान युग में अनेकानेक झंगाओं से घिरे मानव के लिए वैयक्तिक एवम् समष्टिगत संस्तरों पर बहुशः अति प्रासंगिक मानना होगा। वास्तव में योग की प्रासंगिकता मात्र वर्तमान तक ही सीमित नहीं है, अपितु योग की प्रासंगिकता सार्वकालिक, सार्वदेशिक और सार्वजनीन है-- इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हर्षप्रद है कि विश्वयोग दिवस के माध्यम से भारतीय धरोहर योग को उसकी सार्वजनीन सर्वोपयोगिता के स्वीकार एवं अंगीकार की दिशा में आविश्व प्रबुद्ध जनों द्वारा कदम आगे बढ़ा दिया गया है। सम्प्रति आशा की जा सकती है कि शीघ्र ही वह दिन भी साकार होगा जब आविश्व जन-जन द्वारा अष्टांग योग की सर्वसिद्ध महत्ता को स्वीकार किया जाएगा और तब योग के नाम पर मात्र आसन और प्राणायाम द्वारा 'योगा' न करके योग के सम्पूर्ण आठ अंगों को मनसा-वाचा-कर्मणा अपना कर सच्चे अर्थों में उसे सम्पूर्णतया अपनाया जाएगा। शुभस्य शीघ्रम्।

आधार ग्रंथ -

- १- ईशादि नौ उपनिषदः भाष्यकारः आचार्य शंकर
- २- पातंजलि योग-दर्शनः महर्षि पतंजलि, व्याख्याकार आचार्य राजवीर शास्त्री
- ३- बृहदारण्यक उपनिषदः भाष्यकारः आचार्य शंकर
- ४- योग एवं न्याय दर्शनः संहिताकार आचार्य श्रीराम शर्मा
- ५- योग तत्त्व-दर्शनः कृतिकारः डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु'
- ६- श्रीमद्भगवद्गीता: सम्पादक पं० सत्यानन्द जी वेद वागीश
- ७- स्कन्दपुराण
- ८- www.Wikipedia.org



अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

प्रो. किरण हजारिका

(सम कुलपति, इग्नू, नई दिल्ली)

योग महज एक
 'आसन' या 'प्राणायाम'
 का नाम नहीं है,
 बल्कि योग तो
 एक सम्पूर्ण जीवन जीने की
 पद्धति का नाम है।
 इसमें जीवन के सभी पहलूओं
 जैसे स्वास्थ्य, व्यक्तिगत्,
 सामाजिक, आर्थिक,
 धार्मिक, राजनीतिक
 और आध्यात्मिक
 आदि का समावेश है।
 योग व्यक्ति के आहार,
 व्यवहार एवं विचारों को
 संयमित और
 नियंत्रित करता है,
 समाज में सम्भाव को बढ़ाकर
 सामाजिक न्याय स्थापित करता है,
 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यानि
 एक पृथ्वी,
 एक कुटुम्ब, एक भविष्य
 की अवधारणा को
 चरितार्थ करता है।

आइए, आज के इस पावन
 दिवस पर सम्पूर्ण विश्व को
 योग-विद्या से अवगत कराने वाले
 महर्षि पतंजलि
 को
 सादर सहित
 कोटि-कोटि नमन करें।



दरख्तों की परछाई

प्रीति सिन्हा

वह माँ थी,
मानों दरख्तों की परछाई,
लदी हुई थी उसमें,
नातों-रिश्तों की अच्छाई,
करती रही जीवन भर,
छाँवों की भरपाई ।

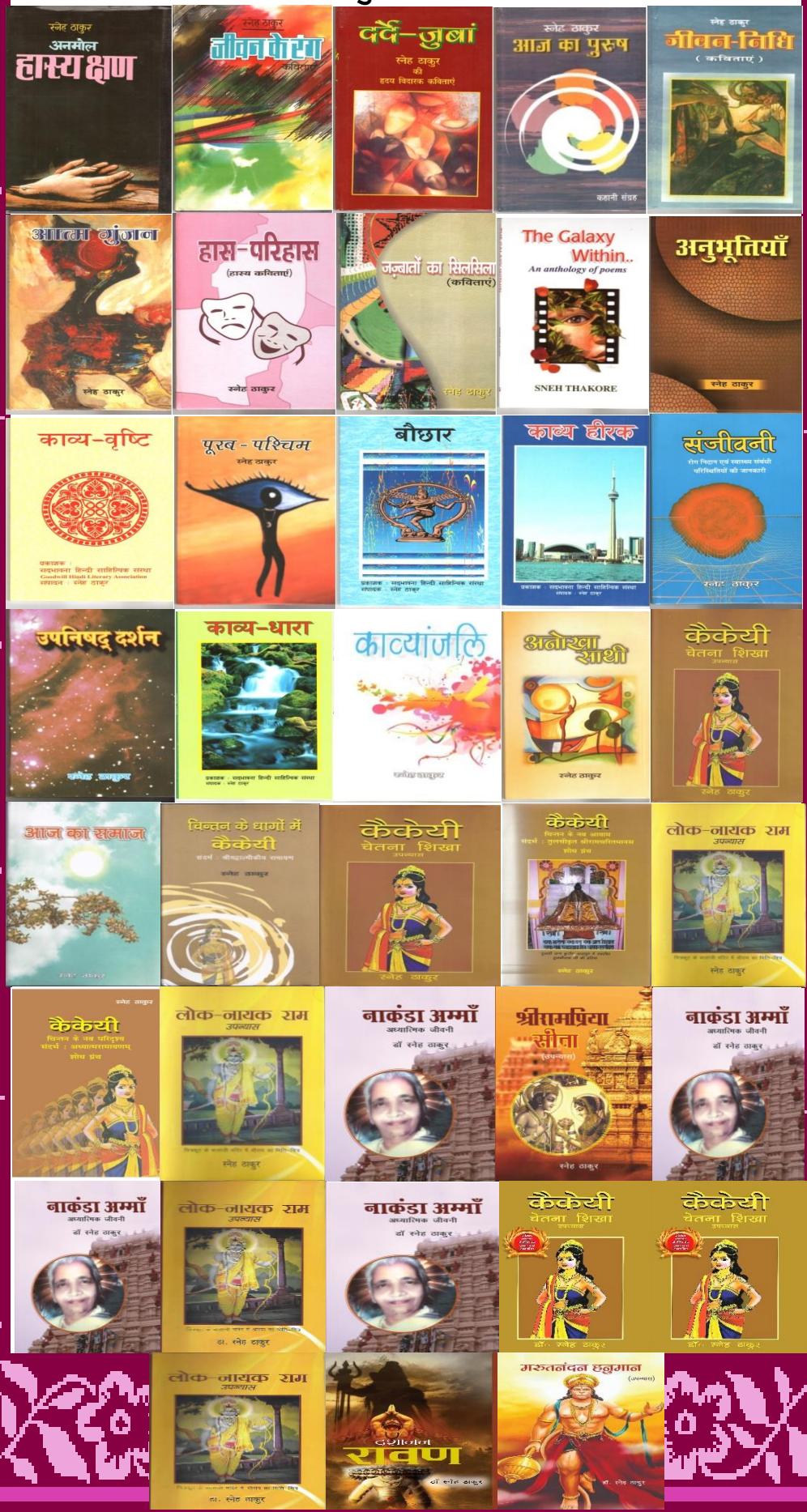
जन्म दिया था उसने,
अनेक शाखाओं को,
दिया था आत्मबल उसने,
झंझावातों को सहने को ।

फला था उसने हमेशा,
दृढ़ता और निडरता,
शाखा-शाखा में भरा था,
साहस की प्रचंडता ।

जब हुई थोड़ी मजबूत शाखाएँ,
स्वयं से अलग कर उसने,
थोड़ी मिट्टी में पानी डालकर,
कहीं दूर उसे लगाई,
फली-फूली वे थपेड़े खाकर,
आँधी-पानी और हवा की,
फूटी कलियाँ आत्म सम्मान की,
निश्चिंत हुई माँ तब जाकर ।

हर शाखा में थी माँ की आत्मदृढ़ता,
बढ़ चुकी थी उनमें जीनें की क्षमता,
जीवन दिख रहा था पत्तों में रमता,
पहचानी थी उन्होंने माँ की महत्ता ।

डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

मरुतनंदन हनुमान	(उपन्यास)
दशानन रावण	(उपन्यास)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदेश - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ)	
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ)	
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ)	
आज का समाज	(सामाजिक लेख-संग्रह)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
अनोखा साथी	(कहानी-संग्रह)
काव्यांजलि	(काव्य-संग्रह)
काव्य-धारा	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
उपनिषिद्ध दर्शन	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
संजीवनी	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
काव्य हीरक	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
बौछार	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
पूरब-पश्चिम	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
काव्य-वृष्टि	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
अनुभूतियाँ	(काव्य-संग्रह)
The Galaxy Within	(A collection of English poems)
ज़ज्बातों का सिलसिला	(काव्य-संग्रह)
हास-परिहास	(हास्य कविताएँ)
आत्म-गुंजन	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
जीवन-निधि	(काव्य-संग्रह)
आज का पुरुष	(कहानी-संग्रह)
दर्द-जुबाँ	(ऩज़म व ग़ज़ल संग्रह)
जीवन के रंग	(काव्य-संग्रह)
अनमोल हास्य क्षण	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेंट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.
४,५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२
भारत

Star Publishers' Distributors
55, Warren Street
LONDON – W1T 5NW
England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित